मन और मैं

(साझा काव्य-संग्रह)

संपादक

विजय लक्ष्मी कोहली

इंकलाब पब्लिकेशन

मन और मैं (साझा काव्य-संग्रह)
संपादक   - विजय लक्ष्मी कोहली
प्रकाशक – इंकलाब पब्लिकेशन
पता - इंकलाब पब्लिकेशन, आर .पी. रेजिडेंसी, गजानन पाटिल चौक,
डोंबिवली (ईस्ट), थाने, महाराष्ट्र , भारत ,पिन – 421201
दूरभाष – 9819273616
ई - मेल : mail@inkalabpublication.com
info@inkalabpublication.com
वेबसाईट : www.inkalabpublication.com

मुद्रक - खुशबू प्रिंटर्स , आर .पी. रेजिडेंसी, गजानन पाटिल चौक,
डोंबिवली (ईस्ट), थाने, महाराष्ट्र , भारत ,पिन – 421201

प्रथम संस्करण : मई 2025
ISBN: 978-93-49155-08-4
मूल्य : 399 रुपए मात्र।

संपादकीय

कविता मन की उस अनकही भाषा का नाम है, जिसे शब्दों के माध्यम से जीवन में रंग, भाव और आत्मा दी जाती है। "मन और मैं" नामक यह साझा काव्य संग्रह, एक ऐसा ही प्रयास है — जहां 'मन' की विविध भावनाओं को 'मैं' के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। यह केवल एक कविता संकलन नहीं है, बल्कि आत्मा की आवाज़ है, जो कहीं न कहीं हर पाठक के भीतर से निकली हुई प्रतीत होती है। यह संग्रह विभिन्न रचनाकारों की संवेदनशीलता, अनुभूतियों और गहराई की अद्भुत प्रस्तुति है। हर रचनाकार ने अपने अनुभव, अपने दृष्टिकोण, और अपनी भावनाओं को इतनी सहजता और आत्मीयता से व्यक्त किया है कि पाठक स्वयं को हर कविता में उपस्थित पाता है। यह पुस्तक, विविधता में एकता का प्रतीक है — जहाँ हर रचनाकार की लेखनी अलग है, फिर भी भावनाओं का प्रवाह एक समान बहता है। "मन और मैं" का चयन केवल एक शीर्षक नहीं, बल्कि एक दर्शन है। यह संग्रह इस बात को दर्शाता है कि हम सबके भीतर एक 'मन' है — जो कल्पनाओं में खो जाना चाहता है, प्रेम करना चाहता है, लड़खड़ाना, संभलना और फिर मुस्कराना चाहता है। वहीं 'मैं' — यानि व्यक्ति स्वयं, अपने अनुभवों, संघर्षों, और संकल्पों के साथ उस मन को थामे चलता है। इस मन और मैं की द्वंद्वात्मक यात्रा ही इस काव्य संग्रह का मूल भाव है।

संपादक - विजय लक्ष्मी कोहली

इस संकलन में प्रेम है, विरह है, प्रकृति है, समाज है, आत्मावलोकन है, आध्यात्म है — अर्थात जीवन का हर रंग, हर छाया। कहीं जीवन की जटिलताओं पर सहज दृष्टि है, तो कहीं सरल पलों की कोमल अनुभूति। यह संग्रह पाठक को सोचने के लिए विवश करता है — कि क्या हम केवल बाह्य दुनिया में जीते हैं या भीतर की दुनिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है?

इस संग्रह के निर्माण में जिन रचनाकारों की सहभागिता रही, उन्होंने न केवल अपनी लेखनी से, बल्कि अपने आत्मिक योगदान से इसे पूर्णता प्रदान की है। उनके विचारों, भावनाओं और कल्पनाशक्ति के बिना यह संकलन अधूरा होता। मैं सभी सहभागी कवियों/कवयित्रियों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने 'मन' की गहराइयों में उतरकर 'मैं' की अनुभूतियों को शब्दों का स्वरूप दिया।

हमारा प्रयास रहा है कि यह संकलन न केवल साहित्य प्रेमियों के लिए रुचिकर हो, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा बने। यह पुस्तक इस विश्वास को भी सुदृढ़ करती है कि साहित्य समाज का दर्पण है — और मन का साहित्य, आत्मा का प्रतिबिंब।

आशा है, "मन और मैं" आपके हृदय को उसी तरह छुएगा, जैसे यह हम रचनाकारों के भीतर से निकला है।

- विजय लक्ष्मी कोहली
संपादक – "मन और मैं"

संपादक परिचय

नाम - विजय लक्ष्मी कोहली
शिक्षिका केन्द्रीय विद्यालय(सेवा निवृत्त)
जन्म स्थान , -बार्लोगंज ,मसूरी, उत्तराखण्ड
रुचि- लेखन, पर्यटन, बागवानी
शिक्षण कार्य के लिए महाराजा अग्रसेन यूनिवर्सिटी एवं, लाइन्स क्लब दिल्ली गैलेक्सी वसुधाया कल्याणम् एन जी ओ द्वारा दो बार सम्मानित।
मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा उत्कृष्ट शिक्षण के लिए सम्मानित।
वर्तमान में- देश की बात फाउन्डेशन मे डिस्ट्रिक्ट कॉंरडीनेटर , समाजिक कार्यकत्री।
महिला स्वास्थ्य, सुरक्षा,शिक्षा एवं रोज़गार पर नि:शुल्क शिक्षण एवं काँउन्सलिंग।
प्रकाशन : देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं एवं साझा संकलन में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।
पुस्तक - मेरी कविताएँ सुनो ना! (काव्य संग्रह)
संपादन - मन और मैं (काव्य संग्रह), साँझ के साए (कहानी संग्रह) , ऑपरेशन सिंदूर (देशभक्ति काव्य संग्रह) इत्यादि।

आँसू

सुख-दुख के सच्चे साथी,
आँखों में छिपकर रहते हैं।
देख न पाते हम-तुम आँसू,
न जाने कहाँ मन में टिकते हैं?
मन के गहरे समंदर से,
कब वाष्प बन उड़ते हैं?
रूप-रंग एक-सा रहता,
सबकी आँखों से जब बहते हैं।
चुपके से कभी धीरे बहते,
मन हिचकियाँ जब लेता है।
देते रहते हरदम दिलासा,
तन्हा तन-मन जब रहता है।
आँसुओं की भाषा इक सी,
समझ सभी को आती है।
इक की आँखों से जब बहते,
तब दूसरे को भी रुलाती है!
मन से आँसुओं का नाता है,
आँखों से बह-बह जाता है।
सुबक-सुबक कर कहते वो सब,
मन जब कुछ न कह पाता है!
वियोग के आँसू, दुख के आँसू,
संयोग के अब सुख के आँसू,
बूढ़ी आँखों में आस के आँसू,
नन्हे-मुन्नों में भूख के आँसू!

आँसू नहीं, ये नारी का भूषण,
दिल के साथी ये हरदम हैं।
रोते देखा है जब-तब उनको भी,
वीर पुरुष जो खुद को कहते हैं!!
आँसू में आस जीवन की है,
पशु-पक्षियों में प्यास जीवन की।
एक रूप, एक रंग में भीगे,
बहते सबकी आँखों से आँसू!!
बंद आँखों में मोती आँसू,
तारों-सी चमक है आँसू।
दिल की धड़कन हैं आँसू,
सुख का आँसू, दुख का आँसू!!
भीगे पल की कसक है आँसू,
दिल के टुकड़े-टुकड़े हैं आँसू।
पलकों से जब-जब गिरते,
हथेली पर मोती से आँसू!!
बादल की आँखों के आँसू,
धरा के दिल में रहते हैं!!
उबल-उबल, तरल-सरल सब,
चुपचाप सिमटे रहते हैं!!!
आँसू से आँसुओं का नाता,
आँखों में सबके तिरते हैं।
झूठों के ये फरेबी आँसू,
सच्चे दिलों के सच्चे आँसू!!

***

रिश्ते

रिश्ते कुछ बैंक में डिपॉज़िट हैं,
चलते हैं नित रिकरिंग दर पे।
न घटते हैं, न बढ़ते हैं,
बस बैंक में डिपॉज़िट हैं।
रिश्ते कुछ लंबे लोन की तरह हैं,
नित ब्याज की दर बढ़ाते हैं।
याद रहते हर वक्त, हर दिन,
प्रीमियम की तरह रुलाते हैं।
रिश्ते कुछ बैंक में डिपॉज़िट हैं,
कुछ रिश्ते जॉइंट अकाउंट हैं,
परिवार के जोड़-तोड़ में व्यस्त हैं।
लेना एक, न देना दो इनको,
सभी बातों में टाँग अड़ाते हैं।
रिश्ते कुछ एफ.डी. बन गए हैं,
दिल में मलहम लगाते हैं।
जब-तब ज़रूरत पड़ती इनकी,
लंबी दूरी से खिंचते चले आते हैं।
रिश्ते कुछ बैंक में डिपॉज़िट हैं।
कुछ पासबुक लिए घूमती हूँ,
रिश्ते की मैं एंट्री करती हूँ।
स्वचालित मशीनों में घूमती,
ये मेरी पासबुक जब भी चलती,
रिश्तों के काले-गोरे चेहरे नज़र आते हैं।
रिश्ते कुछ बैंक में डिपॉज़िट हैं!!
हाँ, कुछ रिश्ते चेकबुक भी हैं,
संभाल रखी है दिल के दराज में।
ये मेरे ही हस्ताक्षर से कैश होंगे,
ये प्यारे रिश्ते, जिन पर मुझे नाज़ है।
रिश्ते कुछ बैंक में डिपॉज़िट हैं।
ये धन का नहीं, मन का बैंक है,
स्वचालित, एकदम स्वतंत्र है।
स्कीमों की इसमें भरमार है,
डिपॉज़िट, डेबिट सिर्फ़ 'प्यार' है।
रिश्ते कुछ बैंक में डिपॉज़िट हैं!!

***

सहयोगी रचनाकार

डॉ. नीरज पखरोलवी	11
सोनिया दत्त पखरोलवी	14
मीनू अग्रवाल	17
पवन कुमार सुरोलिया	20
रसाल सिंह 'राही'	24
रेणुका आर्या	27
श्री जय प्रकाश वर्मा ऊर्फ कलामजी	29
देवेन्द्र थापक	32
महादेव मुंडा	35
विजय कुमार कोसले	39
किरण बैरवा	42
अरविंद कुमार प्रभाकर	45
अविनाश दिलीप कांबळे	48
सुनीता कुमारी	51
अंजू नारंग	55
इमतियाज गदर	58
डॉ0 नरेश चंद्र त्रिपाठी	61
चंद्रमोहन नीले	64
प्रवीण कुमार वर्मा	68
सतीश पंत	71
जीवन सिंह पठानिया 'मृदुल'	75
नूरैन अन्सारी	80
आरती कुमारी	82
विमला सागर	85
मुनीश चौधरी	88
गीतिका सिड़ाना	91

अनिता कुमारी 94
चेतन सिंह वर्मा (शिक्षक) 101
हरेंद्र "हमदम" दिलदारनगरी 105
वंदना राणा 109
रेनू सिंह 112
पुष्पा कुमारी 115
सतीश कुमार 118
डॉ. (प्रो.) उषा कुमारी 121
डॉ. संजय कुमार सैनी 124
डॉ. नवीन जोशी 128

रचनाकार परिचय
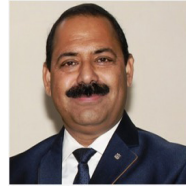
डॉ. नीरज पखरोलवी

पिता का नाम:श्री पवन पखरोलवी
शिक्षा: एम.कॉम., पीएच.डी.
प्रकाशित पुस्तकें:
एकल काव्य संग्रह: अभिव्यक्ति की शाख पर, मैं कुण, तू कुण और सूरज ले लो।
साझा संग्रह: कोरोना काव्य, संवेदना की वीथियों में, अनंत आकांक्षाओं का आकाश, आज़ादी की शौर्य गाथा, हिंदी से हम, लाडो, मेरी कविताएँ आदि।
प्राप्त सम्मान: कोरोना वॉरियर सम्मान, साहित्य सेवा सम्मान, हिंदी रत्न सम्मान, राष्ट्र गौरव सम्मान, राम भक्त सम्मान, कल्पना चक्र हिंदी साहित्य सम्मान आदि।
शोध प्रबंध: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला से "A Critical Study Of Farmers' Indebtedness In Himachal Pradesh"।
सम्प्रति: उच्चतर शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश में प्रवक्ता (वाणिज्य)।
पता: गाँव पखरोल, डाकघर सेरा, तहसील नादौन, जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश - 177038।

तब्बसुम की आस

नींद से आँखों का भरना
आँखों से ख़्वाबों का झरना
ख़्वाबों का बेमौत मरना
मृत का शोक करना
शोकाकुल होकर ही
कुसुम बन खिलने का प्रयास करना
तब्बसुम की आस करना
कितना उचित है ?

हृदय में दर्द ढोना
दर्द का बेदर्द होना
बेदर्दी में ज़र्द होना
ज़र्दी में गर्द होना
गर्द होकर ही
गगन-गाल चूमने का प्रयास करना
तब्बसुम की आस करना
कितना उचित है ?

बंधनों की खींचतान
शैतानी को अभयदान
घरोंदे बने श्मशान
मानवता होती लहूलुहान
लहूलुहान होकर ही
मेघमल्हार गाने का प्रयास करना
तब्बसुम की आस करना
कितना उचित है ?

प्रेम कुल की रीत ठुकराकर
बेबसी-बेकसी से प्रीत लगाकर
विरह मटकी से नवनीत चुराकर
दृगों से मंजू मीत गिराकर
और तन्हाई पाकर ही
उमंग तरंग ढूंढने का प्रयास करना
तब्बसुम की आस करना
कितना उचित है ?

कुहासों भरी भोर में
आघातों की हिलोर में
उत्पातों के खोर में
उसाँसों के शोर में
रहकर, ढहकर, बहकर
भानु-सा उगने का प्रयास करना
तब्बसुम की आस करना
कितना उचित है ?

***

डॉ. नीरज पखरोलवी

दो-मुँहें लोग

हसीन ख़्वाब तो कभी पाले न गए,
फ़ितूर ज़हन से कभी निकाले न गए ।

शिकायत हर किसी से रही ताउम्र ,
आँखों से अपनी मगर जाले न गए ।

उसूलों के घोड़े पे ही रहे तुम सवार,
सच के पन्ने मगर खंगाले न गए ।

जलते रहे सदा फिक्र में औरों की,
दिल से तो अपने कभी छाले न गए ।

होता रहा हर रोज़ इक नया फसाद,
इस लंबी जीभ के परकाले न गए ।

पास रहकर भी मीलों दूरियाँ रहीं,
दोस्त आपसे कभी संभाले न गए ।

ज़िंदा कैसे हैं ये दो-मुँहें लोग जिनसे,
चाल-चलन तो अपने उगाले न गए ।

***

रचनाकार परिचय

सोनिया दत्त पखरोलवी

पति का नाम : डॉ. नीरज पखरोलवी
शिक्षा:- एम.ए (हिंदी),बी.एड .

प्रकाशन:- साझा संग्रह :- कोरोना काव्य, संवेदना की वीथियों में, अनंत आकां_क्षाओं का आकाश, आज़ादी की शौर्य गाथा, हिमाचली भाषा रे मणके,किरनी फुल्लां दी,ख़ुशबू खिलते फूलों की,शब्दों के शिखर पर, लघु प्रभा व अनुगूँज।

सम्मान: कोरोना वॉरियर सम्मान, साहित्य सेवा सम्मान,साहित्य साधना सम्मान,-साहित्य सृजन सम्मान,राष्ट्र गौरव सम्मान, कल्पना चक्र हिंदी साहित्य सम्मान व कथा वैभव सम्मान।

सम्प्रति:- हि.प्र. शिक्षा विभाग में प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका (मानविकी) के पद पर कार्यरत ।

पता: गाँव पखरोल, डाकघर सेरा, तहसील नादौन, जिला हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश-177038

क्या करें ?

अंतर्मन है रुखा-सूखा
दुनिया को बतला रहे
हैं हम हरे-भरे।

इन हँसते चेहरों के पीछे
चेहरे छुपे हैं डरे-डरे।
बंद लगते हैं सब
दरवाजे और खिड़कियाँ
जहाँ कहीं कभी खिलखिलाते थे
कितने ही चेहरे खरे-खरे।

ज़िंदा थे कुछ ही रोज़ पहले
सब रिश्ते-नाते,
अब निभा रहे हैं
रस्मो-रिवाज सब मरे-मरे।

दीनो-ईमान लिए
जो चलते रहे, वे डूबे,
धोखाधड़ी वाले हैं
आजकल तरे-तरे।

झूठा फल-फूल रहा,
चहक-महक रहा,
सच को जिसने ओढ़े रखा,
उसके नैन हैं भरे-भरे।

किसकी खेती, किसका खेत,
किसी को आज परवाह नहीं,
चाहे कोई भी इसको चरे-चरे।

***

सोनिया दत्त पखरोलवी

हमें

तुम देखते रहना, ऐ वक्त
वह जरूर आजमाएगा हमें
नंगे पाँव तपते पत्थरों पर
हँस कर चलना सिखलाएगा हमें।

तुम तो जानते ही हो
ऐ वक्त मेरे साथी,
रूठना तो उसकी
बन गई है आदत सी,
पर अकेलापन जब डसने लगेगा
वह फिर ढूंढता चला आएगा हमें।

उसके तन-मन का चैन
हमने छुपाए रखा है,
उसके हर राज़ को
सीने में दबाए रखा है,
आस ज़िंदा है कि वह
फिर से गले लगाएगा हमें।

सर्द हवाएँ या गहरी धुंध
चुपचाप आ घेरें,
लिपटे हों चाहे हमसे
कितने ही अँधेरे,
हर हाल में, हर जगह
वह तलाश पाएगा हमें।

रचनाकार परिचय

मीनू अग्रवाल

जन्मतिथि: 8-8-1981

जन्मस्थान: प्रयागराज

निवास स्थान: वाराणसी

माता का नाम: स्नेहलता अग्रवाल

पिता का नाम: प्रमोद अग्रवाल

पति का नाम: पंकज अग्रवाल

शिक्षा: - स्नातक (विज्ञान) ,

डिप्लोमा इन कंप्यूटर एप्लीकेशन

कार्य: गृहिणी

प्रकाशन: 1. काव्य धारा - कविता संग्रह

2. काव्य कोष - कविता संग्रह

3. संगम - कविताएं और कहानियां 4. अभिज्ञा (काव्य-संग्रह)

पता: डी 63/31 ए-6, पंचशील कॉलोनी,

महमूरगंज, वाराणसी, उत्तर प्रदेश - 221010

शब-ए-तन्हाई

अमावस की,
अंधेरी, काली, घनी रात,
चहुंओर बिखरा सन्नाटा।
निंदिया रानी कोसों दूर,
हल्की-सी आहट भी
मन डराने को करे मजबूर।
एकांत की वो रात,
न क़िस्से, न कहानियों की बात।
हुजूम तन्हाइयों का संग है,
आज की रात का भी
कुछ अधिक गहरा-सा रंग है।
रात से कुछ डर तो लग रहा,
परंतु अगले ही पल
मन में एक विचार जग रहा।
मुद्दतों बाद मिली
शब-ए-तन्हाई को—
कुछ ख़ास बनाते हैं।
गीत व ग़ज़लों में भींगो कर,
स्वयं से रूबरू हो,
अपने को पास बुलाते हैं।
आज अपनी एक अलग
महफ़िल जमेगी।
अमावस की वो रात भी
आज हमारे सुरों से सजेगी।

बड़ा सुखद होता है
स्वयं से स्वयं के मित्र बन जाना।
आज ख़ुद को देते हैं न्योता—
हम ही वक्ता हैं आज,
हम ही हैं श्रोता।
ज़माने से परे,
कभी न कोई ग़म-ए-रुसवाई होगी।
अपने ही गीतों की झिलमिल रोशनी से,
बड़ी यादगार वो
शब-ए-तन्हाई होगी।।

***

मीनू अग्रवाल

अमृत बेला

ब्रह्ममुहूर्त,
अत्यंत खूबसूरत।
हल्का प्रकाश, हल्का अंधियारा—
भोर का समय होता है प्यारा।
पंछियों की चहचहाहट,
मंद पवन के झोंके।
दृश्य इतना निराला कि
अफ़सोस होता है,
ऐसा अनमोल समय खो के।
शीतलता का होता एहसास है,
प्रथम प्रहर होता बहुत ख़ास है।
समय—कार्य सिद्धि का,
विद्या व बुद्धि का।
बेला भोर की,
जब देवी-देवता विचरण करते।
प्रसन्नता पूर्वक,
ढ़ेरों आशीर्वाद का
वितरण वे करते।।
सूर्य भगवान शनैः शनैः
उदित हो रहे।
शांत व स्थिर हृदय भी
हौले-हौले मुदित हो रहे।
बेला भोर की—
खुशियों के हर छोर की।
प्रभु प्यारे फूलों से सजे,
मंदिर की घंटी और शंख बजे।
ब्रह्ममुहूर्त में उठना
अत्यंत लाभदायक है।
हमारे हर कार्य की सफलता का
यही तो सच्चा परिचायक है।।

***

मीनू अग्रवाल

रचनाकार परिचय

पवन कुमार सुरोलिया

पिता का नामः- स्व. श्री सांवर मल सुरोलिया,
माता का नामः- श्रीमती सरस्वती
स्थाई पताः- ग्रामः डाबड़ीपोस्टः सदीनसर,
जिलाः सीकर (राजस्थान)
वर्तमान पताः बी 310, महालक्ष्मी कॉम्प्लेक्स,
वापी सिलवासा मुख्य रोड़, पोस्टः हरिया पार्क - डुंगरा, वापी
जिलाः वलसाड़ (गुजरात),
व्यवसायः प्राइवेट कंपनी में कार्यरत
सदस्यः वर्ल्ड क्लास मैनफक्चरिंग (WCM), नारायण सेवा सीमित
प्रकाशित पुस्तकः मां की महिमा - मां तेरा सहारा
मेरी कलम से (सांझा संकलन) , अनुभूति भाग - 4 (सांझा संग्रह)
मन की तरंगें , अंतर्मन , अभिव्यक्ति
Reflection मासिक प्रतियोगिता में हिस्सा।
लक्ष्यः लेखनी के द्वारा जन चेतना जागृत करना..।

साफ सुथरा दौर...

एक वो दौर था जहां, राहों में रुकावट न थी।
साफ-सुथरा अंतर्मन सबका, कोई मिलावट न थी।
कच्ची मिट्टी के महलों में, यारों...
एशियन पेंट रंग-रोगन की कोई सजावट न थी।
कच्ची मिट्टी के महलों में, मानवता खिलखिलाती थी।
प्यार-मोहब्बत की बगिया में, कोयल कूं-कूं करती थी।
भरकर दर्द दिल में, हे मानव—
खामखां क्यों खुश होता है?
तू पूछ ले तेरे ही दिल से,
वो बार-बार क्यों रोता है?
दिल का क्या जनाब, वो तो बच्चा है,
अभी नन्हा-सा शिशु है, दिल से सच्चा है।
प्यार से मैंने उसे अपनी
अंजलि में भर लिया...
फिर मुझे अहसास हुआ—
दिल बेचारा, दिल से कच्चा है।
दिल अधीर होने पर,
कई बार मैंने उसे पुचकारा है।
उसकी चंचलता पर
कई बार मैंने उसे झिड़कारा है।
मस्ती के पलों में उछलता, दादुर की तरह,
खुशियों में मल्हार लगाता, सुर मल्हार की तरह।
सलाह-मशविरा दिया है कई बार...
"सतरंगी भेष न बदला कर दिल, किसी भांड की तरह!"
उछलते-कूदते, धड़कते दिल को हम
बचपन से पचपन पार ले आए।

ऊबड़-खाबड़, गर्मी-सर्दी ज़िंदगी के हम
कई आयाम लांघते आ गए।
ज़िंदगी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ी, सफलता की सीढ़ियां चढ़ी,
कमबख्त दिल स्वार्थी बनकर, नित नई कहानियां गढ़ी।
मंथन करता हूं कई बार—
जमाना पुराना बढ़िया था!
आज के दिल जैसे विचार,
बीते जमाने में 'घटिया' न था!!
सहनशीलता, समझदारी—दिल में कोई घबराहट न थी।
साफ-सुथरा अंतर्मन सबका, कोई मिलावट न थी।
एक वो दौर था, जहां...

***

कलियुग में विचित्र कर्मकांड

ग़ज़ब है कलियुग, तेरी कर्म-कहानी!
सास हो गई दामाद की दीवानी!!
दामाद ने सास को, प्यार-ए-इज़हार किया,
सगाई के उपलक्ष्य में, मोबाइल भेंट किया।
दामाद के तोहफे ने सास का दिल मोह लिया,
और फिर अर्धरात्रि के अंधेरे में...
चोरी-छिपे 'गोलचा फ़िल्म' के मुहूर्त का आग़ाज़ हुआ!
कलियुग में इंसानी दिल दादुर बना हुआ है,
शिश्न-उदर पूर्ति में इंसान लगा हुआ है।
अंदाज़ा, अंदर इश्क़ का, जान सका न कोई—
अजीबोगरीब ताना-बाना, इर्द-गिर्द बुना हुआ है!
टर्र-टर्र की रट में दादुर उछाल लगा रहा है,
शिश्न-उदर पूर्ति की लालसा में इंसान,
विचित्र कर्मकांड रच रहा है!
कलियुग तेरे राज में...
बहू को छोड़कर, दामाद सासू मां को भगा रहा है!!
सासू मां और मां—दोनों मां ही तो हैं,
मां के साथ इश्क—यह अपराध ही तो है!!
कलियुग! तूने कोई कसर नहीं छोड़ी है नीच हरकत की,
जय-जयकार हो रही है आजकल इंसानी फितरत की!
कर्महीन की राह पर चलकर...
आदी हो गया है आज का ज़माना, बेआबरू नसीहत की!!
पिछवा बयार बह कर आई, लग रही बड़ी सुहानी—
पति को छोड़कर सास बनी दामाद की प्रेम दीवानी!!
ग़ज़ब है कलियुग... तेरी कर्म कहानी!

***

पवन कुमार सुरोलिया

रचनाकार परिचय

रसाल सिंह 'राही'

जन्मतिथि - 08-05-1986

जन्म स्थान - लददा

शिक्षा - 12th

कार्य - निजी खेत्र (प्राइवेट जॉब)

माता का नाम - श्रीमती गीता देवी

पिता का नाम - श्री राजिंदर सिंह

प्रकाशित पुस्तक - 'अजनबी राहें' - कविता संग्रह

सांझा काव्य संग्रह - 'नई उड़ान'अंक 1 'नई उड़ान' अंक 2

'नई उड़ान' अंक 3 'नई उड़ान' अंक 4

पता - लददा उधमपुर (जम्मू कश्मीर) 182141

ग़ज़ल

जब रही मन में आवारगी ही नहीं
हमने फिर बात दिल की सुनी ही नहीं

जान कह कर हमें जान ही ले गया
क्या कहें खुशनुमा ज़िन्दगी ही नहीं

ना शिकायत रही अब किसी से हमें
जब मिले तुम रही फिर कमी ही नहीं

तुम नहीं ज़िन्दगी में हमारी अग़र
ज़िन्दगी ज़िन्दगी फिर लगी ही नहीं

लग रहा है हमें वो खफ़ा हो गये
झलकती चेहरे पर खुशी ही नहीं

यह ज़माना हमें ही सताता रहा
अब किसी से हमें दिल्लगी ही नहीं

अब यहां रास आता नहीं कुछ हमें
लग रहा अब हमें कुछ हसीँ ही नही

***

ग़ज़ल

बड़ी ज़िन्दगी से सजा कुछ नहीं
वही ग़म पुराने नया कुछ नहीं

किसी को किसी से हुआ इश्क़ है
हमें क्या हुआ है पता कुछ नहीं

कि उनकी यही चाह थी सब मिले
मग़र हाथ उनके लगा कुछ नहीं

कहां थे कहां आ गये वो अभी
मग़र कह रहे हैं हुआ कुछ नहीं

यही सोच कर सोचते हम रहे
दगा करके उनको मिला कुछ नहीं

उसे हाल दिल का बता ही दिया
मग़र याद उसको रहा कुछ नहीं

जो चाहा दिया वो ख़ुदा ने हमें
किसी से हमें अब गिला कुछ नहीं

***

रचनाकार परिचय

रेणुका आर्या

रेणुका आर्या समकालीन हिंदी साहित्य और संगीत जगत की एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनका जन्म 7 जुलाई 1973 को नई दिल्ली में हुआ। उनके पिता श्री सी. आर. आर्या और माता श्रीमती हीरा आर्या ने उन्हें सृजनात्मकता और संस्कृति से जोड़ा। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने हिंदुस्तानी संगीत में विशेष योग्यता प्राप्त की। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. (ऑनर्स) और एम.ए. हिंदुस्तानी संगीत गायन में पूर्ण किया, साथ ही इंदिरा कला विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से भी इसी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि अर्जित की। विगत 26 वर्षों से वे दिल्ली प्रशासन में संगीत अध्यापन कर रही हैं और अपने ज्ञान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य कर रही हैं। साहित्य के प्रति उनकी गहरी अभिरुचि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित आलेखों से स्पष्ट होती है। रेणुका आर्या साहित्य और संगीत के क्षेत्र में अपने समर्पण और सृजनशीलता से निरंतर योगदान दे रही हैं। उनकी लेखनी समाज, संवेदना और कला को एक नई दिशा देने का कार्य कर रही है। इंकलाब पब्लिकेशन मुंबई द्वारा इनकी पुस्तक 'अब मुझको मंजूर है' काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुकी है।

भूला नहीं मैं तुझको

भूला नहीं मैं तुझको, बस अब याद नहीं करता।
तू मिल जाए राह में कहीं गर, तो तुझसे मुँह फेर नहीं सकता।।
भूला नहीं मैं तुझको, बस अब सवालात नहीं करता।
तू मिल जाए राह में कहीं गर, तो तुझसे मुँह फेर नहीं सकता।।
भूला नहीं मैं तुझको, बस अब मुलाक़ात नहीं करता।
तू मिल जाए राह में कहीं गर, तो तुझसे मुँह फेर नहीं सकता।।
भूला नहीं मैं तुझको, बस अब ज़ाहिर जज़्बात नहीं करता।
तू मिल जाए राह में कहीं गर, तो तुझसे मुँह फेर नहीं सकता।।

***

अब मैंने ये ठानी है

सबको खुश रखने का ठेका, क्या मैंने ही ले रखा है?
ख़ुद को खुश रखूँगा—अब मैंने ये ठानी है।
सबकी भूलें भूल जाने का ठेका, क्या मैंने ही ले रखा है?
ख़ुद को क़सूरवार न कहूँगा—अब मैंने ये ठानी है।
सबके अरमानों का ठेका, क्या मैंने ही ले रखा है?
ख़्वाब अपने पूरे करूँगा—अब मैंने ये ठानी है।
सबके जज़्बातों का ठेका, क्या मैंने ही ले रखा है?
अपने जज़्बातों को समझूँगा—अब मैंने ये ठानी है।।

***

रचनाकार परिचय

श्री जय प्रकाश वर्मा ऊर्फ कलामजी

श्री जय प्रकाश वर्मा ऊर्फ कलामजी बिहार राज्य के बेगूसराय जिलांतर्गत नमक सत्याग्रह नगर गढ़पुरा (धरमपुर , वार्ड :- 02) के मूल निवासी हैं। उनके माता का नाम आशा देवी , पिता का नाम श्री विद्यानन्द वर्मा (ग्रामीण चिकित्सक) हैं। श्री वर्मा ऊर्फ कलामजी का जन्म समस्तीपुर जिले के खानपुर में पहली जनवरी 1988 को कुशवाहा परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने शिक्षा- दीक्षा उपरांत भारत के भूतपूर्व महामहिम वैज्ञानिक राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम जी के मिशन पर समर्पित होकर गीत लेखन , कविता एवं कहानी का लेखन किया। उन्होंने मिसाइलमैन कलाम जी के दिखाए हुए मार्ग पर चलकर आज शिक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (ईआरडीओ) में कार्यरत हैं। श्री वर्मा ऊर्फ कलामजी ईआरडीओ में प्रबंध निदेशक सह शिक्षा वैज्ञानिक सलाहकार के पद से सुशोभित हैं। श्री वर्मा ऊर्फ कलामजी की विशेषता यह है कि वे " कला के पाखरिन " एवं " शिक्षार्थियों का मसीहा " के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र वर्ष 2008 से अबतक अनेकानेक गीत , कविता एवं कहानी का संग्रह कर रहे हैं। साथ हीं श्री वर्मा ऊर्फ कलामजी इंकलाब पब्लिकेशन मुम्बई , महाराष्ट्र में साहित्य सलाहकार भी हैं।

बिटिया की लीला है सबसे न्यारी

सखियों की मिलन है प्यारी ,
मां बेटी की रिश्ता है प्यारी ,
मां की ममता है सबसे प्यारी ,
बिटिया को देखा सबसे प्यारी ,
बिटिया की लीला है सबसे न्यारी।

मां की ममता का है राजदुलारी ,
कितनी सुन्दर , बिटिया रानी ,
कभी ना करती वह मनमानी ,
मेरी है प्यारी - सी गुड़िया रानी ,
बिटिया की लीला है सबसे न्यारी।

मां अपनी बिटिया रानी को जब ,
अपनी बिटिया के खातिर है ढुंढ़ती ,
बिटिया खातिर आदर्श घर व बड़ ,
आदर्श परिवार में ब्याह है रचाती ,
बिटिया की लीला है सबसे न्यारी ।

बिटिया रानी जब ससुराल को जाती ,
रखती है ख्याल वह दोनों घर की ,
ब्याह उपरांत बिटिया की घर ससुराल ,
पुतोह बनकर सासु मां की करती सेवा ,
बिटिया की लीला है सबसे न्यारी ।

***

प्रेम की घड़ी में मिलन जो हुआ

प्रेम की घड़ी में मिलन जो हुआ ,
हर क्षण हर पल प्रेम जो हुआ ,
मंदिर मस्जिद में होती है मिलन ,
हाट - बाजार में होती है मिलन ,
प्रेम की मिलन में होती है आनंद।

प्रेम की घड़ी में मिलन जो हुआ ,
प्रेम की रस में आनंद हीं आनंद ,
सोचा नहीं था मुझे जो प्रेम हुआ ,
दो दिलों का संगम प्रेम भड़ा रस ,
प्रेम की बंधन में आनंद हीं आनंद।

प्रेम की घड़ी में मिलन जो हुआ ,
पारिवारिक जीवन में है जो आनंद ,
भाई-बहन का संबंध भी तो प्रेमरस ,
माता पिता का स्नेह भी तो प्रेमरस ,
गुरुशिष्य संबंध अनमोल सा प्यारा।

प्रेम की घड़ी में मिलन जो हुआ ,
पति-पत्नी का संबंध बहुत हीं प्यारा ,
जीवन जो अनमोल है सुरक्षा अपनी ,
मातृभूमि संतान की प्रेम भड़ी कहानी ,
मिलन हुआ सबका अपनों से प्यारा।

***

रचनाकार परिचय

देवेन्द्र थापक

जन्मतिथि- 11 सितम्बर 1958
जन्मस्थान- होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)
माताजी का नाम- श्रीमति कृष्णादेवी थापक
पिताजी का नाम- श्री आर के थापक
शिक्षा- एम एस सी (रसायन शास्त्र)
कार्य- कविता लेखन
प्रकाशित काव्य संग्रह- महक , प्रकाशाधीन- गुनगुनी धूप।
साझा संग्रह – गंगोत्री, सितारे रहेंगे, जीवन एक पहेली, भारत के श्रेष्ठ कवि एवं कवयित्री इत्यादि।
कार्य - शासकीय सेवानिवृत्त
पता- देवेन्द्र थापक नव दूरसंचार कालोनी, पलाश परिसर, नूतन सुपर स्टोर के सामने, गुलमोहर, भोपाल मध्य प्रदेश, पिनकोड -462039

प्रकृति के साथ

एकांत में,
प्रकृति के साथ
अलग ही आनंद आता है।
कभी नदी किनारे बैठकर,
उसके जल से खेलना,
मेरे मन को बहुत भाता है।
प्रकृति के साथ,
अलग ही आनंद आता है।
नदी की रेत से खेलना,
रेत से घर बनाना, फिर मिटाना।
गहराई तक रेत खोदना,
फिर गहराई पाट देना,
मन को ठंडक पहुँचाता है।
प्रकृति के साथ,
अलग ही आनंद आता है।
कभी पेड़ की नई कोंपलों को,
हाथों से सहलाना,
और फूलों को स्पर्श करना,
मन को प्रफुल्लित कर जाता है।
प्रकृति के साथ,
अलग ही आनंद आता है।
थक-हारकर पेड़ की छाँव में,
उसके तने को सिरहाना बनाकर लेट जाना,
सारे तन की थकान मिटा देता है।

प्रकृति के साथ,
अलग ही आनंद आता है।
पंछियों का डालों पर
इधर-उधर फुदकना,
और फिर चहचहाना,
मन को बड़ा बहलाता है।
प्रकृति के साथ,
अलग ही आनंद आता है।
कभी पर्वत की शिलाओं पर
चाहत का नाम लिखना,
और फिर, यादों में खो जाना,
मेरे दिल को छू जाता है।
प्रकृति के साथ,
अलग ही आनंद आता है।

उपसंहार तुम हो

बिखरा हुआ है बसंत मेरे आँगन में,
ऋतु का श्रृंगार तुम हो।
जहाँ भी जाती हो, अंगड़ाई लेता है मौसम,
इन्द्रधनुषी वर्षा की बौछार तुम हो।
जब भी आती हो, मन मोह लेती हो,
मेरे नयनों का हरसिंगार तुम हो।
ख़्वाब में मेरे तुम ही आती हो अक्सर,
होगी हक़ीक़त में मेरी—ऐतबार तुम हो।
लिखा गया है निबंध अपने जीवन का,
मेरे निबंध का उपसंहार तुम हो।

रचनाकार परिचय

महादेव मुंडा

जन्म तिथि- 03.10.1982
जन्म स्थान- चकमे,बुढ़मू,झारखंड
माता का नाम- बुटन देवी
पिता का नाम- छोटन मुंडा
शिक्षा बी. ए, एम. ए, बी. एड,
यूजीसी नेट, झारखंड टेट।
कार्य- शिक्षण
प्रकाशन - प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं एवं
साझा संकलन में रचनानाओं का नियमित प्रकाशन
सम्मान की संख्या - 24 से अधिक

ये मन

ये मन, कभी-कभी
बहुत उद्वेलित-सा हो जाता है,
अपने विचारों के अनुरूप
जब कुछ हासिल नहीं कर पाता है।
थक-हारकर बैठ जाता है,
अपने आप को
असहाय-सा कर जाता है।
तब मैं उसे समझाता हूँ,
धीरे-धीरे बहलाता हूँ।
ये मन,
जब अकेले दुखों से घिर जाता है,
बाहर-भीतर
उथल-पुथल-सा हो जाता है।
सारे दुखों को समेटे मन
तब अंदर ही अंदर रोता है,
ख़ुद को व्यथित कर लेता है।
तब मैं उसे समझाता हूँ,
धीरे-धीरे ढाढ़स बँधाता हूँ।
ये मन,
जब किसी गहरी बातों में
उलझ जाता है,
गहरी चिंताओं में बँध जाता है,
वीहड़ परेशानियों से घिर जाता है,
निर्णय के विचारों में फँस जाता है।
तब मैं उसे समझाता हूँ,
समस्याओं से निकलने का

रास्ता दिखाता हूँ।
ये मन,
जब ऊँची-ऊँची कल्पनाओं में
कहीं खो जाता है,
भावों-भावनाओं में बह जाता है,
मुझसे दूर-दूर-सा निकल जाता है।
मैं उसे क़रीब लाता हूँ,
तब मैं उसे समझाता हूँ,
फिर यथार्थ से अवगत कराता हूँ।
ये मन,
क्या-क्या नहीं सोचता है —
ये भी करूँ, वो भी करूँ —
ऐसी अनगिनत इच्छाएँ रखता है,
हमेशा रंगीन सपने बुनता है।
तब मैं उसे समझाता हूँ,
वास्तविक ज़िंदगी का
सच बतलाता हूँ।
***

मन की ख़्वाहिश

मन की एक ख़्वाहिश थी
कि तुम हमेशा
मेरे साथ होते —
बीते कल की तरह
आँखों के पास होते।
तो कितना अच्छा होता,
शायद मैं सँभल जाता।

कुछ उदास-सी ज़िंदगी मेरी थी,
जिसमें पहली बार तुम्हारा आना था।
कितनी सादगी से हम मिले थे,
न कोई छल था,
न कोई किनारा था।
कितना मधुर प्रेम हमारा था।
पर कभी-कभी
मन ये सोचता है —
क्यों कोई
इतना आवश्यक हो जाता है?
वो न मिले, तो लगता है
जैसे कुछ भी नहीं मिला,
जैसे सब अधूरा हो उसके बिना।
और ऐसे में
वो कहीं से मिल जाए —
तो मन करता है
थोड़ा और पा लूँ उसे,
जो पाया है, कहीं छुपा लूँ उसे।
मिले तब भी,
ना मिले तब भी —
दोनों ही स्थितियों में
मन की ख़्वाहिश कहाँ भरती है?

***

रचनाकार परिचय

विजय कुमार कोसले

श्री विजय कुमार कोसले का जन्म 3 जुलाई 1990 को छत्तीसगढ़ के सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के ग्राम नाचनपाली में हुआ। गणित विषय में स्नातक (बी.एस.सी.) की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने न केवल अकादमिक क्षेत्र में, बल्कि साहित्यिक और पत्रकारिता क्षेत्र में भी अपनी विशेष पहचान बनाई। पत्रकारिता में वे न्यूज़लाइन नेटवर्क के जिला संवाददाता के रूप में कार्यरत हैं।उनकी साहित्यिक उपलब्धियाँ विविध और प्रेरणास्पद हैं। अब तक उनके कई काव्य एवं आलेख संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें प्रमुख हैं — सामाजिक विनती (2018), कविता बाग (2024), राष्ट्र का एहसास (2025), कविताओं का महाकुंभ (2025, सांझ संकलन), तथा मन और मैं (2025, सांझ संकलन)। इन कृतियों में सामाजिक सरोकार, राष्ट्रभक्ति, भावनात्मक गहराई और मानवीय संवेदना का सुंदर समावेश देखा जा सकता है।उनके योगदान को सराहा भी गया है। उन्हें 'साहित्य श्री सम्मान', 'भारत के गौरव पुरस्कार', 'राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार', 'मानव सेवा सम्मान', और 'नेता जी सुभाष चन्द्र बोस भारत रत्न सम्मान' जैसे अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। ये सम्मान न केवल उनकी रचनात्मक प्रतिभा का प्रमाण हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को भी दर्शाते हैं।

संपर्क: ग्राम – नाचनपाली, पोस्ट – लेन्ध्रा (छोटे), तहसील – सारंगढ़

जिला – सारंगढ़ बिलाईगढ़, छत्तीसगढ़। पिन – 496445

संघर्ष करो

हे जगत की वीर संतति,
संघर्ष करो हरदम,
लहराएगा ज़रूर एक दिन
खुशियों का परचम।

संघर्ष सफलता की कुंजी है,
हार कभी न माने,
अवश्य होंगे सफल एक दिन,
मन में इतना ठाने।

आएँ जीवन में जितने चाहें
निराशा के अंधकार,
धैर्य रखें, कोशिश न छोड़ें —
होंगे सपने साकार।

हो जाते हैं हल संघर्षों से
बड़े-बड़े मुश्किल,
जल्द नहीं पर देर से सही —
मिलती है मंज़िल।

मंदिर-मस्जिद जाकर जितनी
मर्ज़ी करें विनय,
संघर्ष किए बिना कोई यहाँ
होते नहीं विजय।

खून-पसीने, कड़ी मेहनत से
जो कर लेते हैं प्रीत,
बाधा-अड़चन, जीत-हार सब
बनते हैं उनके मीत।

जो डटकर कठिनाई में भी
करते हैं संघर्ष,
उनके जीवन में निश्चित ही
आते हैं उत्कर्ष।

***

विजय कुमार कोसले

वीर जवान

भारत माँ के वीर जवान सब
दृढ़ संकल्प निभाते हैं,
सीने में गोली खाकर भी
दुश्मन को मार गिराते हैं।

देखकर जिनके पराक्रम और साहस,
दुश्मन भी कतराते हैं,
देश के वीर जवान मेरे
जब सरहद पर टकराते हैं।

देश की खातिर मर मिटने को
हरपल जो तैयार खड़े,
आंधी-तूफानों में डटकर जो
सीना ताने लड़े।

मातृभूमि की रक्षा में वीर
नींदें-चैन लुटाते हैं,
तब जाकर हर घर में माएँ
लोरी गा, बच्चे सुलाते हैं।

खुशनसीब होते वीर जो
बलिदानी हो जाते हैं,
एक-एक कतरा लहू देह का
काम वतन के आते हैं।

शहीद वीर सैनिक की पत्नी
क्षत्राणी बन जाती है,
बेटा बने न सैनिक जब तक
चैन नहीं वो पाती है।

मेरे देश के वीर जवान को
सत-सत मेरा प्रणाम है,
जिनके साहस, त्याग, बलिदान से
यह बना देश महान है।

***

विजय कुमार कोसले

रचनाकार परिचय

किरण बैरवा

जन्म स्थान - जयपुर राजस्थान

शिक्षा - M.A. B.ed

कार्य - वरिष्ठ अध्यापक (हिंदी)

माता का नाम - श्रीमती मथुरा देवी

पिता का नाम - श्री रामसहाय जी बैरवा

पता - सांगानेर,जयपुर राजस्थान।

वो ही तो हूँ मैं

गुज़ार दिए होंगे दिवस, मास, वर्ष,
जो एक रात न कट सके — वो पल ही तो हूँ मैं।
जाने कितने ही लोगों से, कितनी ही दफ़ा की होगी बातें,
हृदय की सुन सकूँ, वो शख़्स ही तो हूँ मैं।
जीवन में बिताए हैं हसीन पल सबके साथ,
जो कभी भुला न पाओगे — वो लम्हा ही तो हूँ मैं।

दुनिया की भीड़ में जब खुद को तन्हा पाओगे,
एहसास जो अपनेपन का करा दे — वो साथ ही तो हूँ मैं।
अपने ही मसलों में जब अपने आप को खो दोगे,
खुद के ही वजूद से रूबरू करा दूँ — वो हल ही तो हूँ मैं।
अतीत के बेजुबान भावों को जब कह नहीं पाओगे,
मूक विचारों को अभिव्यक्त कर दे — वो शब्द ही तो हूँ मैं।

मन की तमन्नाओं को बयाँ करने में जब हिचकिचाओगे,
मुख से प्रेम-सुधा बरस जाए — वो स्वर ही तो हूँ मैं।
ज़िंदगी में कभी उलझनों से भीगने लगे तन,
पाक हो जाए चित्त जिससे — वो ख़याल ही तो हूँ मैं।
मुसीबतों से निपटने में जब अथक प्रयास से थक जाओगे,
उसी वक्त चेहरे पर रौनक आए — वो मुस्कान ही तो हूँ मैं।

***

जिम्मेदारियों में बदल गया

बचपन में खिलखिलाता वो चेहरा अब मुरझा गया,
बिना सोचे-समझे बोलने वाला अब चुप हो गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
सारे दिन अल्हड़पन से घूमने वाला अब रुक गया,
"माँ, भूख नहीं है" से अब "खाना बनाऊँगा" बोलने लग गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
बाइक के बिना घर से निकलता नहीं था — अब बस पर रुक गया,
जिसे इंतज़ार करना नहीं भाता था — अब इंतज़ार करते ही रह गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
खूब खेलता-कूदता था — अब एक जगह ही थम गया,
घर से ऑफिस और ऑफिस से घर — यही उसका संसार बन गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
"पसंद का खाना नहीं है" से अब "कुछ भी खा लेंगे" तक आ गया,
करेला, लौकी, टिंडा भी अब भाने लग गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
किसी की नहीं सुनने वाला — अब बॉस की डाँट सुनने लग गया,
जो पलटकर जवाब देता था — अब मौन रहना सीख गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
पापा से पैसे माँगने वाला अब खुद कमाने लग गया,
"जरूरतें पूरी क्यों नहीं होती?" से अब "कैसे होंगी?" सोचने लग गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।
"दोस्ती ही सबसे बड़ी दौलत है" — ऐसा कहने वाला,
अब खुद में ही सिमटकर रह गया,
बरस बीत गए — मिलना-जुलना छूट गया,
हँसता-मुस्कुराता शख़्स अब जिम्मेदारियों में बदल गया।

किरण बैरवा

रचनाकार परिचय

अरविंद कुमार प्रभाकर

श्री अरविंद कुमार प्रभाकर का जन्म 13 अप्रैल 1978 को गम्हरिया, मधेपुरा (बिहार) में हुआ। बी.ए. तक शिक्षित श्री प्रभाकर शिक्षा के क्षेत्र में 24 वर्षों से सक्रिय हैं और माँ भवानी चाइल्ड स्कूल, गम्हरिया के संचालक हैं। वे लेखक, नाटककार और समाजसेवी भी हैं। उनकी रचनाएँ शक्ति स्वरूपा काव्य संग्रह में प्रकाशित हुई हैं और बेसिक फाउंडेशन बुक (गणित व मानसिक योग्यता परीक्षा) के लेखक हैं। उनकी अप्रकाशित लघु नाटकों में इज्ज़त की रोटी और माँ भवानी की महिमा उल्लेखनीय हैं। उन्हें शिक्षा सम्मान पुरस्कार सहित कई सामाजिक सम्मानों से सम्मानित किया गया है। वे अनेक संगठनों से जुड़े हैं, जैसे — प्राइवेट स्कूल्स एंड चिल्ड्रेन वेल_ फेयर एसोसिएशन, उत्थान फाउंडेशन, सृजन मंडली आदि, तथा नव अंतर्जातीय युवा संगठन के मीडिया प्रभारी भी हैं। उनका सामाजिक, शैक्षिक और साहित्यिक योगदान प्रेरणादायक है।

माता-पिता की अनमोल बातें

मेरे बच्चे, तुम्हारी उम्र है सीखने की, कुछ करने की,
नई कहानियाँ गढ़ने की, हर पल में जीने की।

माता-पिता की बात मानो, उनकी दुआ है तुम्हारे साथ,
वे सही राह पर चलना सिखाते हैं, निभाते हैं जीवन भर साथ।

सफलता की मंज़िल पाने के लिए, इस राह को अपनाओ,
माता-पिता की बात मानकर, अनगिनत परिणाम पाओ।

सुबह जल्दी उठो, दिन की शुरुआत करो जतन से,
अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए, तैयार रहो मन से।

अपने शब्दों को सोच-समझकर बोलो प्रेम से,
माता-पिता के कार्यों में सहयोग करो तन-मन से।

माता-पिता की दुआ और आशीर्वाद है सदा तुम्हारे साथ,
उनके कार्यों में ऊर्जावान बनो, दो पूरे दिल से साथ।

***

सपनों की उड़ान

सफलता की राह पर आगे बढ़ो,
मन लगाकर पढ़ाई करो।

अपने सपनों को सच बनाओ,
मेहनत से लक्ष्य को अपनाओ।

हर दिन एक नई चुनौती है,
हर मौका साहस से अपनाओ।

मेहनत से ही सफलता मिलेगी,
नई ऊँचाइयों तक उड़ान भरो।

सपनों को बड़ा और ऊँचा रखो,
महत्वाकांक्षा में विश्वास भरो।

मेहनत से ही मिलेगा मुकाम,
बस ईमानदारी से कर्म करो।

***

रचनाकार परिचय

अविनाश दिलीप कांबळे

जन्म तिथिः 11/09/1995 विटा (सांगली)
शिक्षाः MA,SET,NET (Hindi), PhD (Pursuing)
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
पत्राचार का पताः
आंबेडकर नगर, कुंडल रोड, विटा
तहसील - खानापुर,
जिला - सांगली, पिन नं. 415311
व्यवसायः शोध छात्र
प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में कई शोधपत्र प्रकाशित।
विभिन्न साझा काव्य संग्रहों में अनेक रचनाएं प्रकाशित।
राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनो स्तरो पर कार्यशालाओं,
सेमिनारों और सम्मेलनों में सहभाग।

भर्ती

जंगल में निकली भर्ती,
सभी जानवरों को मिली पर्ची।
जंगल का राजा शेर,
बैठा साक्षात्कार लेने, नीचे गूलर।
एक जगह थी चपरासी की,
हुए लाखों जानवर उसमें शामिल।
अनपढ़ से लेकर पढ़े-लिखे तक,
सबको मिला आवेदन का अवसर।
नौकरी की तलाश में भटकता,
मानव भी पहुँचा जंगल में बेकार।
जंगल की रखवाली करने,
वह भी हो गया तैयार।
पर जानवरों ने किया इनकार,
कहा – यह जंगल है, हमारा संसार।
गुस्से से लाल हुआ मानव,
तोड़ने चला जंगल, हजारों की फौज के साथ।
औद्योगीकरण के इस दौर में,
लाखों पेड़ और जानवर हुए शिकार।
कत्ल का मुलज़िम बना शेर,
बदली व्यवस्था की तस्वीर पर धिक्कार।

***

सावधान

अब तो सावधान हो तू मानव,
बार-बार मौके नहीं मिलते।
अपने फायदे के लिए तूने,
कई हरे-भरे जंगल निगल लिए।
अपने सुख की खातिर तू,
आई.टी. कंपनियाँ खोल रहा।
पर सुशिक्षित छात्र वर्ग अब,
जंगल बचाने आगे बढ़ चला।
बेरोजगारी की समस्या,
जंगल तोड़ने से नहीं मिटेगी।
अगर रोजगार चाहिए,
तो स्वार्थ की बात नहीं चलेगी।
न की परवाह किसी पशु-पक्षी की,
आंधी की तरह सब पर टूट पड़ा।
हिरन, मयूर, हाथी भागते-भागते,
सिखा गए हमें खतरे की घड़ी बड़ा।
राष्ट्रीय पक्षी भी हुए बेघर,
हम सब बाकी आम ही रह गए।
वैश्वीकरण के इस महाजाल में,
उजड़ी प्रकृति को क्या कहें!
पर्यावरण से छेड़छाड़ का,
हमें भारी मूल्य चुकाना पड़ेगा।
यदि यही चलता रहा तो,
विश्व का सर्वनाश निश्चित होगा।

***

रचनाकार परिचय

सुनीता कुमारी

सुनीता कुमारी का जन्म 10 अप्रैल 1975 को जम्मू-कश्मीर के कठुआ ज़िले के हीरानगर में हुआ। आपके पिताजी श्री अमर नाथ एवं माताजी श्रीमती लीला रानी के सुसंस्कारों से आप बाल्यकाल से ही ज्ञान, सेवा और संस्कृति की दिशा में प्रेरित रहीं। आपके जीवनसाथी श्री गुरदयाल जी ने आपके शिक्षण और साहित्यिक जीवन में सदा सहयोगी भूमिका निभाई। आपका व्यवसाय अध्यापन है और आप शिक्षिका के रूप में विद्यार्थियों के जीवन को सँवारने का कार्य वर्षों से कर रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आपके योगदान को कई राष्ट्रीय मंचों पर सराहा गया है। आपको "नेशन बिल्डर अवार्ड 2023", Top 100 Teachers Award 2023, तथा राष्ट्रीय आदर्श शिक्षक पुरस्कार 2023 जैसे प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त आपने साहित्य और हिंदी सेवा के क्षेत्र में भी अद्वितीय योगदान दिया है जिसके लिए आपको हिंदी सेवा रत्न सम्मान (2024), प्राइड ऑफ इंडिया अवार्ड, श्री उदय प्रकाश सम्मान (इंकलाब पब्लिकेशन), राष्ट्रीय हिंदी सेवा सम्मान (संगम अकादमी, राजस्थान), शास्त्री सुरेंद्र दुबे 'अनुज जौनपुरी' सम्मान, स्वर्ण आभा साहित्य सम्मान, विश्व रत्न हिंदी सम्मान, सृजन शिखर साहित्य सम्मान, भारत काव्य रत्न सम्मान, रंग रस सम्मान और शब्द सैनिक सम्मान जैसे अनेक पुरस्कारों से नवाज़ा गया। आपका काव्य संग्रह "मेरे हमदम" पाठकों के बीच विशेष रूप से सराहा गया है। इसके अतिरिक्त आपने कई साझा संकलनों में अपनी साहित्यिक उपस्थिति दर्ज कराई है, जिनमें प्रमुख हैं— नई उड़ान, नई उड़ान-2, नई उड़ान-3, नई उड़ान-4, हवाओं का आँचल, रूह तक, शान-ए-तीरंगा, मन की बातें, हृदय स्वर, काव्यदीप, दियाप्रीत, जीवन परिचय, ऐसा देश मेरा, विश्व रत्न हिंदी, फागुन फुहार और शब्द सैनिक।

आईने को पता है

आईना सब जानता है,
हर वो चेहरा जो इसके सामने आया,
हर मुस्कान जो आँखों तक नहीं पहुँची,
हर आँसू जो गिरने से पहले ही पोंछ लिया गया।
आईना गवाह है—
उन शब्दों का, जो होंठों तक आकर रुक गए,
उन आहों का, जो धुंधले शीशे पर उभर आईं।
आईना गवाह है—
उस वक़्त का, जब कोई ख़ुद को निहारता है,
और सोचता है—
"क्या मैं अब भी वही हूँ?"
आईना कुछ नहीं कहता,
पर इसके सीने में दबी हैं
अनगिनत कहानियाँ,
जो कभी ज़ुबान पर नहीं आतीं।
क्योंकि यह जानता है—
हर चेहरे के दो रूप होते हैं—
एक जो दुनिया देखती है,
और एक... जो सिर्फ़ आईने को पता है।

***

सुनीता कुमारी

आख़िरी मुहब्बत

तुम वो गीत हो,
जो लफ़्ज़ों के पार जाकर
धड़कनों की धुन में बस गया है।

तुम वो शाम हो,
जो सूरज के बुझने के बाद भी
आसमान में ठहरी रहती है।

तुम वो हवा हो,
जो हर मौसम में
मुझे अपने आगोश में समेट लेती है।

तुम्हारी हँसी से खिलती हैं सुबहें,
तुम्हारे ग़म से सहम जाती हैं रातें।
ये जो दिल में उजाले हैं,
वो तुम्हारी आँखों से चुराए हैं।

मैंने हर लम्हा बस तुम्हें चाहा,
हर दर्द में तुम्हारा नाम पुकारा।
कभी मेरी आवाज़ बनकर,
कभी मेरी ख़ामोशी में उतरकर—
तुम हमेशा मेरे साथ रहे।

कितने मौसम गुज़र गए,
कितनी रातें बीत गईं,
पर मुहब्बत वही है,
वही धड़कन, वही एहसास।

बदला कुछ नहीं,
तुम बिन कोई अब जचता नहीं।
तुम रम गए हो मुझमें,
मेरी रूह तक।

शायद यही इश्क़ है,
जिसका कोई अंत नहीं,
जिसकी कोई हद नहीं।

और अब यह इत्मीनान हो गया है—
कि तुम ही आख़िरी मुहब्बत हो मेरी,
तुम बिन कुछ भी नहीं—
न चाहत, न राहत, और न मैं।

***

रचनाकार परिचय
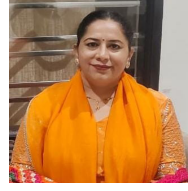
अंजू नारंग

नाम - अंजू नारंग
(उपनाम: उन्मुक्त पवन 'नाज़')
निवास – श्रीगंगानगर, राजस्थान
जन्म तिथि – 29 सितंबर 1980
पेशा – वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेज़ी)
लेखन विधा – स्वतंत्र लेखन; कविता, ग़ज़ल आदि
प्रकाशन – विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

गंतव्य को चल

जागृत कर पुरुषार्थ, मनुज हे!
तज आलस्य, तिमिर तंद्रा को।
क्रांति-समर की उठा पताका,
धैर्य-सत्य पर रथारूढ़ हो।
परिवर्तन का शंखनाद कर,
नियति-नाट्य का सूत्रधार बन।
चल! अपने गंतव्य को चल। ॥1॥

जलधारा का मान मर्दन कर,
रसना-रथ के पाश-बंध में।
खींच कुहासे से भविष्य को,
अपने पौरुषयुक्त स्कंध से।
मन के ज्वारों का निग्रह कर,
नर्तन कर उत्ताल तरंग पर।
चल! अपने गंतव्य को चल। ॥2॥

अचल धरा-सा परिक्रमित हो,
लक्ष्य-अक्ष पर टिके निरंतर।
विस्तृत नभ-सा फैल सकल पर,
यशोवस्त्र ले बने यशांबर।
हृदय जलाकर यज्ञ-कुंड-सा,
भोर सुनहरी का भास्कर बन।
चल! अपने गंतव्य को चल। ॥3॥

नए सृजन का लक्ष्य साध तू,
रूढ़ि की दीवार ध्वस्त कर।
संदेह-कूप की भेद कालिमा,
ज्ञानदीप ले पथ प्रशस्त कर।
संकल्प-सखा ले संग समांतर,
दुर्ग-अभेद्य का प्रस्तर बन।
चल! अपने गंतव्य को चल। ॥4॥

***

अंजू नारंग

आम औरत

आम औरत
बड़ी ख़ास है।
किसी वीरांगना की तरह,
उसकी कहानी नहीं लिखता इतिहास।
उसके शौर्य का उत्सव नहीं मनाती दुनिया।
युगों-युगों से देहरी भीतर समर में है—
निहत्थी, खून-पसीने से लथपथ,
सृष्टि की लौ को जलाए।
आम औरत
किसान-सी है,
बोती जा रही है
संस्कारों के बीज—उन्नत किस्म वाले।
सींचती है अपने अस्तित्व से ताकि
सभ्यताओं का पेट भरा रहे,
परंपराओं का बाग भी हरा रहे,
पीढ़ी दर पीढ़ी खुद को मिटाए।
आम औरत
हस्ताक्षर-कवि है,
जो लिख-गा रही है प्रेम।
सदियों से सिखा रही है कि—
त्याग के सुरों पर प्रेम का गीत सजता है।
नियति की वीणा के तारों में फँसकर,
कट गई हैं उसकी उँगलियाँ,
कंठ से हृदय तक छलनी है इसी सुर से,
फिर भी नए सुर सजाए।
आम औरत
बड़ी ख़ास है।

अंजू नारंग

रचनाकार परिचय

इमतियाज गदर

समकालीन हिंदी-उर्दू साहित्य में इमतियाज गदर एक सशक्त, सजग और संवेदनशील रचनाकार के रूप में पहचान रखते हैं। 28 सितंबर को जन्मे इमतियाज गदर ने इतिहास एवं उर्दू में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की है। साथ ही उन्होंने बी.टी. तथा पत्रकारिता में डिप्लोमा करके अपने ज्ञान और अभिरुचि को एक नई दिशा दी। उनका साहित्यिक योगदान विविध विधाओं में देखा जा सकता है, विशेषकर कथा-साहित्य में उनका लेखन गहराई और प्रासंगिकता से भरा हुआ है। इमतियाज गदर की प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं – अलीपुर बस्ती (उपन्यास, समदर्शी प्रकाशन, मेरठ), पीछे छूटते लोग (लघुकथा संग्रह, सृष्टि प्रकाशन, चंडीगढ़) तथा प्लाज्मा (कहानी संग्रह, बोधि प्रकाशन, जयपुर)। इन कृतियों में समाज के बदलते चेहरे, आम जनजीवन की विडंबनाएँ, और मनुष्य के अंतर्विरोधों को अत्यंत सूक्ष्मता और प्रभावशाली भाषा में प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाएँ वागर्थ, ककसाड़, दोआबा, गुलमोहर जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित होती रही हैं। इमतियाज गदर को उनके कथा-लेखन के लिए लघुकथा श्री सम्मान (भोपाल) और कमल सुनृत वाजपेयी कथा सम्मान (नई दिल्ली) जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है। यह सम्मान उनकी साहित्यिक चेतना और निरंतर सक्रिय लेखन साधना का प्रमाण है। वर्तमान में वे लेखन के साथ-साथ अध्यापन कार्य से भी जुड़े हुए हैं। वे न केवल एक शिक्षक के रूप में बल्कि एक मार्गदर्शक, समाजचिंतक और सजग लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। उनका निवास झारखंड के धनबाद ज़िले के गोमो क्षेत्र में है।

संपर्क विवरण: C/o सलीम हाउस, शहीद गड्ढा, पुराना बाज़ार,
गोमो, धनबाद – 828401 (झारखंड)

आह! सब छोड़ चला

आह!
सब छोड़ चला,
कितनी मेहनत से
सजाई थी एक बगिया
दिन रात करके मेहनत
बनाई थी सुन्दर कुटिया,
पीछे छूट गया
संसार का मेला,
आह!
सब छोड़ चला,
हर क्षण रहा
धन जुटाने का ध्यान,
गिरवी रख दी
अपने दीन धर्म ईमान,
अफसोस न कर सका
अपना अंत भला,
आह!
सब छोड़ चला,
रिश्ते नाते बंधु
सब को भुलाकर,
धन खूब बचाया
जान लगा कर,
पर, सुकून जीवन में
एक पल न मिला,

आह!
सब छोड़ चला,
दिन को दिन न समझा
रात को भी कभी
चैन से न सोया,
अब लगता है सारी उम्र
हमने खुद को छला
आह!
सब छोड़ चला,
न काम आया
अपना अकूत धन
न बेटा बेटी
और न कोई जन
जो करता काम स्वच्छ
सब का होता भला
आह!
सब छोड़ चला।

***

एक और संसार मिल भी जाए तो

मनुष्य सदियों से
सर उठाए आकाश की ओर
निहारता रहा है,
वह पहुंचना चहता है
आकाश के अनंत छोर पर
या फिर
आकाश के उस पार
एक नए संसार में
जहां दुःख दर्द ,
राग द्वेष, धनी निर्धन
जाति धर्म के चिन्ह
लेस मात्र भी न हो
वह उड़ सके पक्षियों
से भी अधिक उन्मुक्त होकर
न कोई सीमाएं हों
देशों की
रिश्तों की
कर्तव्य अधिकारों की
और न भय सताए
ऊपर से नीचे गिरने की
निर्बल को बलशाली का
राजा को रंक होने का
आकर न जाने वाले बुढ़ापे का
मृत्यु के भयावह चेहरे का

पर, यदि एक और संसार
मनुष्य को मिल भी जाए, तो
क्या वह अपनी प्रवृत्ति के
मोह को त्याग पाएगा,
या फिर
इस धरती का वासी ही
बना रह जायेगा।

***

इमतियाज गदर

रचनाकार परिचय

डॉ0 नरेश चंद्र त्रिपाठी

जन्म-30 -09-1956, सीतापुर, उ.प्र

शिक्षा-एम0ए0(अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र),पी-एच0डी0,सेवा-प्रवक्ता,एसोशियेट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र , प्राचार्य ,रामनगर पी0जी0कालेज, रामनगर, बाराबंकी।

प्रकाशन-व्यष्टि अर्थशास्त्र, भारतीय अर्थव्यवस्था,समष्टि अर्थशास्त्र तथा मुद्रा बैंकिंग एवं लोक वित्त,उपभोक्ता अर्थशास्त्र, शिक्षा के नूतन आयाम ,शिक्षा में नवाचार, पत्र- पत्रिकाओं एव जर्नल्स में 100से अधिक लेख प्रकाशित। बाल विज्ञान कांग्रेस ,नवजीवन फाउंडेशन आदि शैक्षिक - सामाजिक संस्थाओं एवं संगठनों से संबध्द।

नवपल्लव और हरित धरा की ओर, काव्य संग्रह प्रकाशित

वर्तमान आवास -185,स्वप्न लोक कालोनी,चिनहट, लखनऊ (उ.प्र)

प्रेम भक्ति का मार्ग

प्रेम, नेह व निकटता; प्रेम, प्रीति की रीति।
प्रेम ज्ञान से ऊपजै, जब होवे परतीति।।

प्रेम धरे बहुरूप है, जिनमें रूप विशेष,
मां, पत्नी अरु प्रेयसी, मातृभूमि व देश।।

ढाई अक्षर प्रेम के, भौतिक व अध्यात्म,
प्रेम जागतिक हो कभी, कभी चरण श्रीराम।।

प्रेम भक्ति का मार्ग है, प्रेम भक्ति की दृष्टि,
प्रेम परस्पर मिलन है, प्रेम चलाए सृष्टि।।

पंडित जाने प्रेम को, बोले दास कबीर,
जपे प्रेम से ईश को, वह ज्ञानी, वही धीर।।

लोभ-वासनाएँ त्याग कर, जो करता है प्यार,
वही सच्चा प्रेम है, प्रचलित यह संसार।।

प्रेम डोर कोमल बड़ी, रखिए इसका ध्यान,
मृदु भाषा, शुचि आचरण, और तजो अभिमान।।

प्रेम 'रिलेशनशिप' नहीं, प्रेम राग अनुराग,
एकनिष्ठ, निश्छल रहो, लगे न कोई दाग।।

***

डॉ0 नरेश चंद्र त्रिपाठी

सुख-दुःख आते-जाते रहते

कर्मों का फल मिलता सबको,
पाठ सभी को पढ़ना होगा।
निज कर्मों का भोग मिला है,
दोष स्वयं पर मढ़ना होगा।।

सुख-दुख आते-जाते रहते,
स्वाभाविक दोनों का होना।
सुख में बीता समय सुखद तो,
सब कुछ तुमको लगे सलोना।।

दुख का समय अगर है आया,
ऐसे में विचलित मत होना।
इसे मानो प्रारब्ध, चलो तुम,
बंद करो यह रोना-धोना।।

नहीं रहा यदि सुख जीवन में,
तो दुःख को भी जाना होगा।
धैर्य और संयम से इसको,
मिलकर तुम्हें बिताना होगा।।

कर्म किए जो पहले हमने,
फल उनका तो ढोना होगा।
आगे अपना समय हो अच्छा,
सदकर्मों को बोना होगा।।

***

डॉ0 नरेश चंद्र त्रिपाठी

रचनाकार परिचय

चंद्रमोहन नीले

भारतवर्ष के पंजाब प्रांत के शहर फगवाड़ा में नीले परिवार में मेरा जन्म हुआ ! श्री श्याम लाल जी सौभाग्य से मेरे पिता थे और माता जी श्रीमती रतन देवी थी! सात भाई बहनों के भरे पूरे परिवार में सबसे छोटा मैं था! समय के साथ कई मौसम बदले नए साथी मिले पुराने बिछड़े, ग्रेजुएशन करने के बाद मेरा दाना पानी अपनी जन्म-स्थली से कर्मस्थली मुंबई में ले आया,बड़े भाई श्री चमन नीले जी के पास जो फिल्म उद्योग में निर्देशक थे! उनके साथ सहायक बनने पर मेरे सपनों और सोच को सही और नई दिशा मिल गई! जीवन संगनी बनी राजरानी एक पुत्री ममता और एक पुत्र प्रणय का पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ !परिवार का प्रेम और सहयोग मिला! अगर जीवन में कुछ संघर्ष मिला तो ईश्वर ने साहस भी दिया सपनों को पूरा करने के लिए! फिल्म और टेलीविजन इंडस्ट्री में लेखक, निर्देशक और एक्टर के रूप में व्यस्त रहा !मुझे लिखने का शौक स्कूल कॉलेज से ही था कविता, गीत, गजल, लघु कथा! कोरोना काल के दौरान जब अपने साथ समय बिताने का काफी अवसर मिला तो मैंने महसूस किया कि मेरा वह शौक अब जुनून बन गया है! जीवन की राह पर चलते-चलते मुझे जो अनुभव हुए, जो कुछ मैंने महसूस किया बस उन्हें लिखता गया! जो भी ख्याल मन में आए उन्हें शब्दों में पिरोकर गीत बनाकर रखता गया! मेरे उन्ही अनुभवों का संग्रह है,मेरी ये पुस्तकें "गीतों का उपहार" "गीतों का गुलदस्ता" "भावांजलि" "गीतों की गंगा" "गीत जिंदगी के" "गीतों की माला" "ढाई अक्षर प्रेम का"प्रीत के गीत" गीतों का सागर" "गीत मिलन के" गीतों का गुलशन" यह सब पुस्तके फ्लिपकार्ट अमेजॉन आदि पर उपलब्ध है! जिया मां साहित्य मंच के सांझा काव्य संग्रह "निशब्द प्रेम" में भी मेरी कुछ कविताएं प्रकाशित हुई है!

मन और मैं

मन मेरा बहुत समझाता है,
मुझे राह सही दिखलाता है,
लेकिन मैं समझ न पाता हूं,
फिर बाद में मैं पछताता हूं!

जो मन की बात नहीं सुनता,
ख़ुद राहों में वो कांटे बोता है,
मन मर्ज़ी मुताबिक जो चलता,
वो मंज़िल का पता पा जाता है!
मन मेरा बहुत समझाता है,
मुझे राह सही दिखलाता है,
लेकिन मैं समझ न पाता हूं,
फिर बाद में मैं पछताता हूं!

मन और मैं के बीच में अक्सर,
होती रहती है बहुत लड़ाई,
वो जो कहता है, मैं सुनता नहीं,
जो वो चाहता है, मैं मानता नहीं,
हम दोनों ही जिद्दी हैं बहुत,
झगड़ा ये सुलझ नहीं पाता है!
मन मेरा बहुत समझाता है,
मुझे राह सही दिखलाता है,
लेकिन मैं समझ न पाता हूं,
फिर बाद में मैं पछताता हूं!

मैंने जो चाहा, सदा वही किया,
मेरी मैं ने मुझको हरा दिया,
मैंने मन की अगर सुनी होती,
मेरी हालत ना तब ऐसी होती,
मन तो हमारा इक मंदिर है,
भगवान उसमें हमेशा रहता है!
मन मेरा बहुत समझाता है,
मुझे राह सही दिखलाता है,
लेकिन मैं समझ न पाता हूं,
फिर बाद में मैं पछताता हूं!!

***

भाईचारा!

इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए,
बिना बताए जो कर सके महसूस,
दिलों में वो दर्द का रिश्ता होना चाहिए!

प्रेम के जो दे हमें मीठे फल,
सब्र का वो बीज बोना चाहिए,
जब भी हों गर्दिश में सितारे,
बंदे को धीरज ना खोना चाहिए।
इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए!

जिस हाल में भी रखे हमें परमात्मा,
बस हमेशा खुश ही रहना चाहिए,
हर किसी को कोई न कोई तक़लीफ है,
हाल पे अपने बेवजह ना रोना चाहिए।
इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए!

जीवन में जागृत रहो और चौकन्ने रहो,
घोड़े बेच कर ना सोना चाहिए,
बोझ न बनें हम कभी किसी के ऊपर,
बोझ अपना ख़ुद ही ढोना चाहिए।
इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए!

जितना हो सके रखें सफाई का ख़्याल,
दिल में न रखें किसी के लिए भी मलाल,
गंदगी से अपनी ना गंदा करें समाज को,
भरे बाज़ार ना अपना मैल धोना चाहिए।
इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए!

कम से कम रखें हम अपनी ज़रूरतें,
ज़रूरत से हो ज़्यादा बाँट देना चाहिए,
मुस्कुराने से नहीं घटता है कभी कुछ,
जितना हो सके हमें मुस्कुराना चाहिए।
इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए,
बिना बताए जो कर सके महसूस,
दिलों में वो दर्द का रिश्ता होना चाहिए!
इंसान का इंसान से,
भाईचारा होना चाहिए!!

***

रचनाकार परिचय

प्रवीण कुमार वर्मा

पिता का नाम: श्री बाबूलाल वर्मा
माता का नाम: श्रीमती दीपा
जन्म तिथि: 26/08/1977
शिक्षा: एम.ए., बी.एड.
व्यवसाय: प्राध्यापक (इतिहास)
पता: महादेव गली,
जुबली स्कूल के पास,
फालना – 306116, राजस्थान।

केवल तुम ही हो

मैं जानता हूँ,
बहुत अच्छी तरह जानता हूँ
तू बहुत ज़्यादा परेशान है।
इस जहाँ में कौन है जो नहीं परेशान है?
इस जहाँ में कौन है जो पशेमान नहीं है?
शायद
तेरी परेशानी को कम तो न कर सकूँ,
तेरी परेशानी से लड़ भी तो न सकूँ —
मैं।
पर, दुआ है मेरी —
तुझे मिले ताक़त इतनी,
हिम्मत, रफ़्तार, जोश से भरी हो इतनी —
कि
सारे जहाँ के दर्द और दुखों से लड़ सके जितनी।

***

वो कहती नहीं

आती है जो सदा ख्यालों में,
सामने वो कभी आती नहीं।
अपनी-सी है,
अपना होकर,
अपना वो कभी कहती नहीं।
सब्र है मेरा,
इंतज़ार है मेरा,
शुक्र है खुदा का —
वो मेरी है...
मैं उसका हूँ कि नहीं —
ऐसा वो कभी कहती नहीं।
जीवन है यही मेरा,
छाया घना है अंधेरा,
दिखता नहीं है सवेरा,
फिर भी
आती है जो ख्वाबों में,
वो आने को ऐसा कभी कहती नहीं।
आती है जो सदा ख्यालों में,
सामने वो कभी आती नहीं।

***

रचनाकार परिचय

सतीश पंत

माता - श्रीमती तुलसी पंत
पिता - श्रीयुत नंदा बल्लभ पंत
जन्मतिथि - 25 दिसंबर , दिल्ली,
शिक्षा - विकिरण भैतिकी एवं विकिरण विज्ञान में स्नातक ।
हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, अपराध विज्ञान (समाजशास्त्र) में स्नातकोत्तर।
वर्तमान में चिकित्सा सेवा में कार्यरत।
साहित्यिक अभिरुचि, पठन-पाठन,काव्य लेखन , काव्य संग्रह की पुस्तकें प्रका-
शित तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सतत् रचनाएं प्रकाशित।

पता- SATISH PANT
CT SCAN DEPARTMENT
1ST FLOOR , SANT PARMANAND HOSPITAL
PLOT NO. 1 2 & 3, PARK AREA, JAMUNA BAZAR
NEAR MARGHAT WALE HANUMAN BABA MANDIR
DELHI-110006
PH- 9599094285

हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो!

देह का अभिमान छूटा,
गेह का विश्राम छूटा,
नेह का विराम छूटा,
मिथ्या स्वाभिमान छूटा —
शीघ्र अंगीकार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
अब हुआ परित्यक्त जग से,
डगमगाया स्वयं के डग से,
देह मुझसे है विलग से,
मैं भी देह से हूँ अलग से —
अब तो मुझसे प्यार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
अनसुना एक गीत कोई गा रहा,
मौन के भीतर भी मौन छा रहा,
श्वास रोके शांत कोई जा रहा,
मौन का संगीत ही अब पा रहा —
मुझसे एकाकार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
अब शुभ-अशुभ का मुझे कुछ डर नहीं,
ये यहाँ अंतिम मेरा कोई घर नहीं,
देह नश्वर थी मेरी, मैं तो नहीं —
ले चलो इसे कहीं और सही,
अब मेरा सत्कार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
निकट आकर देखता वह देह को,
कर न पाया जो अनुभव स्नेह को,

कर रहा अंतिम नमन इस देह को,
मुक्ति मिल गई उसके संदेह को —
अब न अप्रतिकार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
कृत्य करने को अभी कुछ शेष थे,
काज करने के लिए कुछ विशेष थे,
भेंट करनी थी जो विश्लेष थे,
हाय! मिल न पाया उनसे जो प्रदेश थे —
अब तो सर्वाधिकार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
प्रश्नवाचक, विस्मयादि से परे,
अर्ध, अल्प, विरामों से परे,
पूर्ण में स्थित, जग से परे,
है यही नियति जो टाले न टरे —
मेरे सब विकार हर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
द्वार खोलो, प्रेयसी, खड़ा मैं यहाँ,
जग से निष्कासित हूँ, जाऊँ कहाँ?
पितृमेध प्रारंभ अब हो गया यहाँ,
देह के निकट नहीं रह सकता यहाँ —
मेरा आत्मोद्धार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।
क्या करोगे दग्धता से मेरा अंत?
दग्ध होता ही रहा जीवन पर्यंत,
कर सकोगे दग्ध मेरे दुःख अनंत?
दग्ध हृदय, दग्ध सुख और दग्ध पंथ —
बस प्रणय-संस्कार कर लो,
हे प्रिये, अब मुझे स्वीकार कर लो।

अब लो हे प्रिय, अंतिम विदाई!

आज सुना जब तुम नहीं देह में,
हृदय व्याकुल हो आया है।
विगत स्मृतियाँ साक्षी खड़ी हैं,
नयनों में नीर भर आया है।
किंकर्तव्यविमूढ़ बना मैं,
अवरुद्ध कंठ हो आया है।
कुछ खंडित-भंजित सा भीतर,
अश्रुपूरित मन हो आया है।
यद्यपि देह की प्रीति नहीं है,
आत्मा का ही ध्यान हुआ है,
किन्तु हूँ साधारण मानव मैं,
आत्मा का नहीं ज्ञान हुआ है।
अब लो हे प्रिय, अंतिम विदाई,
उस जगती से रथ आया है।
इस जगती का पथ इतना ही,
उस जगती का पथ आया है।
शाश्वत के ही अंश थे प्रिय तुम,
अब शाश्वत वह घर आया है।
यही सत्य है, कहते सब जन,
गद्गद पंत हो आया है।

***

रचनाकार परिचय

जीवन सिंह पठानिया 'मृदुल'

माता -स्व श्रीमती गंगी देवी जी

पिता -स्व, श्री दासू राम पठानिया जी

शिक्षा - शास्त्री,एम ए (हिन्दी) साहित्याचार्य -१ , सी.ए.आइ.आइ. बी -१

रचनाएं - उपन्यास, दहेज़ प्रताड़ना दोषी कौन, दर्द भरी राहें, प्रकाशित एक छोटी काव्य कृति पांडुलिपि और शेष दो उपन्यास अर्ध लिखित, अन्य दुसरे सांझा काव्यों में कविताएं प्रकाशित हुई।

पता:- ग्राम - छुहड़ा

डाकघर व तहसील टिहरा

ज़िला -मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

पिनकोड - 175026

मेरा मन मीत

चाहे फिरता रहूं मैं अकेला,
मन रहता है मेरा मस्त मौला।
रहता है इसमें भावी उड़ानों का डेरा,
रहता है इसमें हसीन सपनों का बसेरा।
गर जीतें मन को, तो हो जाती है हर जीत,
अगर हो मन में प्यार भरे भाव,
तो हर कोई बन जाता है अपना मीत।
जहाँ भी चलेंगे तुम साथ-साथ,
चलने को रहेंगे वो सभी तैयार।
अगर हो गांठ में पैसा,
करते रहेंगे सभी तुमसे प्यार।
मन के हारे, जाते हैं सब हार,
जब नहीं रहती गांठ में पैसा,
छूट जाता है अपनों और दोस्तों का प्यार।
अपने लक्ष्य का भी नहीं पा सकते पार,
गर्त में जाने को मन हो जाता है तैयार।
बनो कर्मठ, व कठिन परिश्रम साधो,
न दो मन को भटकने की छूट —
इसे कर्म बंधन में बांधो।
फिर कठिन से कठिन बाधाओं को लांघो,
और अपने लक्ष्य को साधो।
अगर रहेगा मन, दूजे के प्रति मैला,
कैसे होगा मानव का भविष्य उज्ज्वला?
ना बनाओ मन को दीन, हीन, मलिन —
साध लो सपनों को, हो जाओ प्रवीण,
हो जाएंगे तुम्हारे कांटों भरे पथ क्लीन।

अरे मन! तू क्यों है रे गमगीन?
चल, याद कर बीते सुंदर पलों को,
ले चल मुझे भी सुंदर कमल दलों में,
जहाँ कीचड़ में खिलते हैं कमल के फूल,
और उन पर भौंरे करते हैं झूम-झूम।
कर उन सुखी पलों को याद,
न कर दुख में अपना अमूल्य समय बर्बाद।
सुन ले मेरे 'मृदुल' मन की बात,
किया करो दुखी वक्त में —
गुजरे हसीन पलों को याद।
दे देंगे वे तुम्हें,
आगे बढ़ने की सौगात।

***

मेरा अस्पताल दौरा

समय ने बदली अपनी चाल,
उम्र के पड़ाव पर हो गया था बेहाल।
सहधर्मिणी चल रही थी लंबे समय से बीमार,
ले गया था मैं उसे एक चिकित्सालय,
करने को उसका उपचार।
पर्ची काउंटर पर लगी थी
एक लंबी सी कतार,
पर्ची बनवाने की पंक्ति में
खड़ा होने को हो गया मैं तैयार।
आधे घंटे बाद पहुँचा खिड़की के पास,
खड़ा-खड़ा थककर हो गया था उदास।
जैसे ही झांका मैंने खिड़की के उस पार,
देखा, कुर्सी पर बैठी थी एक सुंदर नार।
उसने कहा, "तुम हो वरिष्ठ जन, अंकल,
तुम अंदर जाओ, वहाँ लगा है
आप लोगों के लिए अलग काउंटर।"
हो गया गुस्से में मेरा चेहरा लाल,
देख मुझे, डर गई वह सिस्टर — मेरा हाल।
बोली, "लाओ अपना तुम आभा कार्ड,
तभी होगा रजिस्टर में आपका नाम दर्ज।"
नहीं था मेरे पास आभा कार्ड,
कहा उसने — "जाओ लोकमित्र केंद्र,
साथ में ले जाना आधार कार्ड,
वहीं बनेगा आभा कार्ड,
तभी सुनेंगे डॉक्टर आपकी अर्जी।"

थक-हार कर लौट आया मैं वापस घर,
नहीं हुआ वहाँ मेरी बीमारी का उपचार।
अगर ऐसा ही होता रहा बार-बार,
कैसे कर पाएंगे बुजुर्ग व अपंग अपना इलाज?
सरकार, कुछ कर दो ऐसा उपाय,
जिससे मिले बुजुर्गों को चिकित्सा का न्याय।

***

रचनाकार परिचय

नूरैन अन्सारी

माता -जमीला ख़ातून
पिता- हाजी मुबारक अन्सारी
जन्म तिथि - 2 जनवरी 1982
जन्म स्थान - गोपालगंज (बिहार)
सम्प्रति - प्रोग्राम मैनेजर
शैक्षिक योग्यता - एम.बी.ए

प्रकाशित पुस्तकें -
वक़्त के परिंदे (ग़ज़ल संग्रह)
कुछ तो बात हैं (कविता संग्रह)
अपनइत (भोजपुरी ग़ज़ल संग्रह)
बिखरे हुए ख़्वाब (ग़ज़ल संग्रह)
देखावा के जिनगी (गज़ल संग्रह)

वर्तमान पता - C2/171A,न्यू अशोक नगर
नई दिल्ली - 110096

ख़त तेरा अब तक जलाया नहीं हूँ

ख़त तेरा अब तक जलाया नहीं हूँ,
इसका मतलब तुझे भुलाया नहीं हूँ।
मुहब्बत के मौक़े मिले कई बार,
घर लेकिन अपना बसाया नहीं हूँ।
तेरी गलियों से होकर गुज़रा नहीं,
तेरे दर पे दुबारा मैं आया नहीं हूँ।
सुनाए नहीं अपने दर्द के किस्से,
ज़ख़्म कहीं अपना दिखाया नहीं हूँ।
तन्हा ही काटा सफ़र ज़िन्दगी का,
ख़िजाँ में रहा, पर मुरझाया नहीं हूँ।

चलता रहा मैं तन्हा, ठहर नहीं गया

चलता रहा मैं तन्हा, ठहर नहीं गया,
अपनी मयार से मैं उतर नहीं गया।
जी ली ज़िंदगी तुझसे बिछड़ के भी,
देख, तेरी बेवफ़ाई से मर नहीं गया।
मैंने तेरी निस्बतों से कर ली तौबा,
लौटकर दुबारा तेरे शहर नहीं गया।
तुझको देखकर मैं कैसे मुस्कुरा दूँ,
तेरे दिए ज़ख़्मों का असर नहीं गया।
मैं करता रहा चमन की रहबरी, नूरैन,
दौरे-ख़िजाँ जब तक गुज़र नहीं गया।

***

रचनाकार परिचय

आरती कुमारी

जन्मतिथी - 10/08/1980

शिक्षा - L LB, MA

पत्राचार का पता-आरती कुमारी

सेक्टर- 4D, कवाटर नंबर-3088

बोकारो स्टील सिटी

बोकारो, झारखण्ड-827004

मेरे दोस्त

मेरी दोस्त, तुम ही तो थी
जिसने मुझे समझाया... बताया
कि रक्त, धर्म, जाति
के बाहर भी कुछ रिश्ते होते हैं,
जो बहुत अज़ीज़ होते हैं —
जीना सिखाते हैं हर हाल में।
मेरी दोस्त, तुम ही तो थी —
तुमने ही तो सिखलाया
खुलकर हँसना,
जो दिल में है, जुबां पर लाना,
अश्क भरे हों आँखों में,
फिर भी खुशी के मोती छलकाना।
तुमने ही बनाया जीवन के अटूट रिश्ते,
जो हर शर्त से इतर दिलों से जोड़े जाते हैं।
दिल नहीं मिलते, फिर भी दिलों को जोड़े रखते हैं,
विचार नहीं मिलते, फिर भी निभाए जाते हैं।
निभाने की भी कोई शर्त नहीं होती,
बस जिए जाते हैं।
भूलकर हर ग़म, खिलखिलाकर हँसना —
मेरी दोस्त, तुम ही तो हो।
दुःख-दर्द की आहट को चुपके से सुन लेना —
मेरी दोस्त, तुम ही कर सकती हो।
बाँट लेती हो हर ग़म,
खुशियाँ कर देती हो दोगुना।
तुम्हारे बिना जीवन हो जाएगा सूना।
मेरी दोस्त, तुम ही तो थी,
जिसने मुझे समझाया... बताया —
कि कुछ पल ख़ुद के साथ भी जीना।

आरती कुमारी

प्रेम

प्रेम क्या?
होता क्यों?
बांधे कौन?
लाँघे कौन?
अनादि, अनंत —
बेइंतहा, अनहद —
बेहिसाब, असीमित —
सब इसमें रमे,
फिर तरसे कौन?
इंतज़ार में जलना,
मिलन में मौन —
बिन बात कहानी,
रात की रानी।
कहता कौन —
क्यों इतना अगम?
क्यों इतना बेचैन?
प्रेम क्या?
सीधी भी और उलटी भी,
शांत भी और चंचल भी,
मदमस्त बसंती,
अल्हड़पंती।
पाकर खोया,
खोकर पाया —
रहती बेचैन है काया।

एक तिलिस्म या माया?
समझो तो अज्ञानी,
ना समझो तो विज्ञानी।
प्रेम अलख जगायो,
जग भरमायो —
लागे जग निराला,
मनोहर हाला।
प्रेम करे सो जाने —
जीवन अमृत माने।

***

आरती कुमारी

रचनाकार परिचय
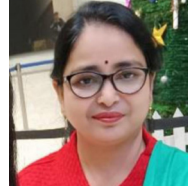
विमला सागर

नाम -विमला, उपनाम - सागर
जन्मतिथि - 01/05/1981
जन्म स्थान - गाँव -ताजपुर, पोस्ट -तसींगा,
जनपद - हाथरस (उत्तर प्रदेश) पिन - 281302
पिता - श्री विश्वंभर सिंह , माता - माया देवी
पति - श्री बाबू लाल सागर , शिक्षा - बी .ए .,बी.एड.,
कार्य - अध्यापन कार्य (बेसिक शिक्षा परिषद (उ . प्र .)
पत्राचार संपर्क - ए 70 इंदूपुरम कॉलोनी औरंगाबाद रोड़,
जनपद मथुरा , पिन - 281006 (उ . प्र .)
प्रकाशित कृतियां - डॉ . भीमराव अम्बेडकर
(साझा काव्य संग्रह,कई पत्रिकाओं में कविताएं प्रकाशित,
एवं काव्य मंचों से काव्यपाठ)।

देख रहे हैं दुनिया वाले

देख रहे हैं दुनिया वाले,
विलुप्त होती नदियों को,
गंदा नाला बनी हुई जो,
तरसती अविरल धारा को।

देख रहे हैं दुनिया वाले,
कटते जंगल-वृक्षों को,
दूषित होती हवा यहाँ,
बढ़ते मानव दुःख-दर्दों को।

देख रहे हैं दुनिया वाले,
तरसते मीठे पानी को,
स्रोत जल के सूख रहे,
अति दोहन और विष घोलने को।

देख रहे हैं दुनिया वाले,
बढ़ते मानव स्वार्थ को,
दिल से मिटते भ्रात भाव,
और दम घुटते संस्कारों को।

***

घर की खुशी

जिस घर की औरत खुश रहती,
वहाँ खुशियाँ दौड़ी आती हैं।
हर रिश्ते का मान रहे,
घर की इज्जत बढ़ जाती है।

आलस, क्रोध और दुख भागे,
सुख-शांति घर में आती है।
बालक-बूढ़े खुश रहते सब,
और उम्र बढ़ जाती है।

न धन-दौलत की कमी रहे,
थोड़े में गुजर हो जाती है।
चलती है कदम से कदम मिलाकर,
हर दुःख में साथ निभाती है।

रहे समर्पित घर के लिए,
हर व्याधि दूर भगाती है।
बच्चों को दे उत्तम शिक्षा,
संस्कार महान बनाती है।

निष्छल मन से कर्म करे,
बदले में कुछ न पाती है।
प्यार-मोहब्बत थोड़ा चाहे,
विमला सिर्फ़ सम्मान चाहती है।

***

रचनाकार परिचय

मुनीश चौधरी

पद: प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय लौदाना,
तहसील जेवर, जनपद गौतमबुद्धनगर (उत्तर प्रदेश)
जन्म स्थान: ग्राम व पोस्ट लौदाना, तहसील जेवर,
जिला गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश – 203141
पिता का नाम: श्री देवेन्द्र सिंह
माता का नाम: श्रीमती ब्रह्मकौर देवी
रुचियाँ: मुनीश चौधरी न केवल एक समर्पित शिक्षक हैं, बल्कि लेखन, संगीत और धार्मिक पर्यटन में भी गहरी रुचि रखते हैं। साहित्य के माध्यम से वे समाज और जीवन के विविध रंगों को सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं।
विशेष: शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए उन्होंने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ साहित्यिक चेतना को भी जाग्रत किया है। धार्मिक स्थलों की यात्राएँ, भक्ति-संगीत और सामाजिक विषयों पर लेखन उनके व्यक्तित्व को विशेष बनाते हैं।

दिल की ज़िद

(प्रियतम मित्र के लिए)

दिल जानता है हक़ नहीं है मेरा,
फिर भी उसी के ख़्वाब बुनता है ये सवेरा।
ना कह सकते उसे अपना,
ना जी सकते उसके बिना।
हर सुबह सोचता हूँ — अब दूरी बना लूँ,
अपने जज़्बातों को कहीं दफ़ना दूँ।
पर उसकी एक मुस्कान याद आती है,
और मैं फिर से हार जाता हूँ।
वो मेरी नहीं — ये हक़ीक़त है,
मगर उसकी हर बात में मोहब्बत है।
वो जब हँसती है, तो जैसे सारा जहाँ रोशन हो,
और जब चुप होती है, तो मन वीरान हो।
कभी सोचा था — छू भी ना सकूँगा उस आसमान को,
मगर उसके साथ बैठकर तारे गिनने की ख़्वाहिश हो गई।
हर बात में उसका ज़िक्र ढूँढ़ता हूँ,
हर ख़ामोशी में उसकी आवाज़ सुनता हूँ।
पर वो मेरे लिए सिर्फ़ एक नाम नहीं — एक एहसास है,
जिसे हर रोज़ जीता हूँ, हर रोज़ मरता हूँ।
फिर भी उसी की तरफ़ खिंचता चला जाता हूँ।
काश ये दिल मान लेता बातों को,
पर दिल है, जनाब — ये तो बस उसी की ज़िद करता है।

***

मन नहीं मानता

मन नहीं मानता तेरे बिना,
हर सवेरा अधूरा लगता है।
तेरी एक झलक की आस में,
हर दिन एक सदियों जैसा लगता है।
समझ कहती है — राह बदल,
जिसे पाना मना है, उसे भूल चल।
पर दिल है कि रुकता नहीं,
तेरे नाम पर ही धड़कता है हर पल।
क्यों है ये तड़प, ये बेचैनी तेरे लिए?
क्यों हर ख़ुशी अधूरी है तेरे बिना ही क्यों?
ना तू साथ है, ना तू पास है,
फिर भी हर ख़्वाब में तेरा ही एहसास है।
कभी-कभी सोचता हूँ — छोड़ दूँ ये चाहत,
काट लूँ दिल से मोहब्बत की राहत।
पर जब भी करता हूँ ऐसा इरादा,
तेरी यादें बन जाती हैं जज़्बातों का तूफ़ान।
कैसे समझाऊँ इस पागल मन को?
जो ना हालात समझता है, ना बंधन को।
बस चाहता है तुझे बेइंतिहा,
चाहे इस चाहत की कोई मंज़िल न हो कभी भी।

***

रचनाकार परिचय
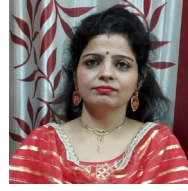
गीतिका सिड़ाना
(उत्तर प्रदेश)

मेरा भारत महान

मेरा भारत महान, मेरा भारत महान,
गर्व है मुझे अपने भारत पर,
जहाँ देवताओं और वीरों ने जन्म लिया,
शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति देकर इसे आज़ाद किया।
सलाम है उन बलिदानों को, जो देश के लिए शहीद हुए!
कृषि प्रधान देश है मेरा,
महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, पंडित नेहरू,
रानी लक्ष्मीबाई, चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह जैसे
महान राष्ट्रनायकों ने यहाँ जन्म लिया।
उन्होंने देश का नाम रोशन किया,
जिनका ऋण हम कभी चुका नहीं सकते।
अनेकता में एकता है इस देश की पहचान,
यह सदा भाईचारे का संदेश देता है।
यहाँ बहती है प्रेम की रसधार,
लोग एक-दूसरे के लिए जान तक न्यौछावर कर देते हैं।
गीता, कुरान, बाइबिल और गुरुग्रंथ जैसे
पवित्र ग्रंथों का ज्ञान यहाँ मिलता है।
शरद, हेमंत, शीत, बसंत, ग्रीष्म, वर्षा —

ऋतुएँ बारी-बारी आकर इसका श्रृंगार करती हैं।
गंगा, यमुना, सरस्वती —
प्रेम की धारा बनकर इसे सींचती हैं।
भारत अपनी संस्कृति और रीतिरिवाज़ों के लिए महान है।
तीन रंगों वाला तिरंगा इसकी शान है।
हम इसके सम्मान में कभी आँच नहीं आने देंगे।
जीते-जी मिट जाएँगे,
मगर इसका मस्तक झुकने नहीं देंगे!

***

हिन्दी हमारा गौरव है

हिन्दी हमारा गौरव है,
हमारे देश की शान है।
यह हमारी राष्ट्रभाषा है,
हमारी मीठी वाणी और पहचान है,
हमारी संस्कृति, धर्म और परंपरा की जान है।
यह सहज और सरल भाषा है,
जिसका विश्व में तीसरा स्थान है।
देवनागरी लिपि में लिखी यह भाषा
देवतुल्य मानी जाती है।
मुंशी प्रेमचंद, रामधारी सिंह 'दिनकर',
मैथिलीशरण गुप्त, हरिवंशराय बच्चन जैसे
महान लेखकों ने इसे अपने साहित्य से समृद्ध किया है।
मत समझो इसे तुच्छ भाषा,
और न करो इसका बलिदान,

क्योंकि इसी से हमारे ज्ञान ने लिया विस्तार।
अंग्रेज़ी, बंगाली, उर्दू, पंजाबी जैसी भाषाएँ
बाद में आईं, पर हिन्दी है हमारी पहली पहचान।
आधुनिक युग में घट रहा है इसका मान,
कंप्यूटर, लैपटॉप और स्मार्टफोन के आविष्कार के बाद,
विद्यालयों में यह ऐच्छिक विषय बन गई है —
और हो रहा है इसका पतन!
पर दोस्तों, हम नहीं होने देंगे इसका अपमान।
हम पढ़ेंगे और पढ़ाएँगे इसे,
करेंगे उज्जवल भविष्य का निर्माण।
यह अमृत समान पवित्र धारा है,
तो पढ़ो — और गर्व से पढ़ाओ।
हिन्दुस्तान की इस भाषा को विशेष महत्व दो,
उसे महान बनाओ — और करो
जगत का कल्याण!

***

रचनाकार परिचय

अनिता कुमारी

श्रीमती अनिता कुमारी, एम.ए., वर्तमान में हरेकृष्ण सिंह सीनियर सेकेंडरी स्कूल, हसनपुर (वैशाली) में व्याख्याता के पद पर कार्यरत हैं। वे माधवी श्याम महिला कॉलेज, महुआ की संस्थापक प्राचार्या रह चुकी हैं। साथ ही, वे अंतरराष्ट्रीय जर्नल "रीसेंट लाइफ साइंस मिरर" की पब्लिकेशन सेक्रेटरी तथा "दुर्गा नेशनल एजुकेशन ट्रस्ट" की सचिव हैं।

वे पर्यावरण प्रेमी हैं और अध्ययन हेतु मलेशिया, थाईलैंड, म्यांमार, भूटान आदि देशों की यात्रा कर चुकी हैं। पारिवारिक और समसामयिक विषयों पर उनकी कविताएँ एवं लघुकथाएँ प्रकाशित होती रही हैं। उनकी प्रमुख कविताओं में "रिमझिम बारिश की बूँदें", "एक सपना छूट गया", "कोई सुनता नहीं", "परिवर्तन का दौर" उल्लेखनीय हैं।

इनके पति डॉ. सत्येन्द्र कुमार, डी.एस-सी (जंतु विज्ञान), प्रसिद्ध शिक्षक एवं "वेटलैंड मैन" के रूप में ख्यात हैं।

पता: उत्तरी शाही कॉलोनी (पोखरा), हाजीपुर, वैशाली, बिहार – 844101

माटी की गंध

सोचती हूँ,
कुछ लोग इतने प्रभावित क्यों करते हैं?
कुछ बात तो होगी उनमें,
जो उन्हें आम से खास बनाती है,
बरबस ही दिल के पास ले आती है।
यों तो
मेरे अपने और अपने जैसों की
सूची में ढेर सारे नाम हैं,
जेहन में उनकी शख्सियत और काम हैं,
चेतन और अचेतन मन में
उनकी अमिट छाप है।
पर कुछ लोगों ने
अपने सरल व्यवहार, मृदु वाणी और
सकारात्मक ऊर्जा से हृदय में घर बसाया है,
हमें भी सशक्त और ऊर्जावान बनाया है।।
शरद की एक ठंडी सुबह,
दूब पर चमकती ओस की बूँदें,
सूर्यकिरण से दमकती धरती,
और दहलीज पर बैठी मैं,
पति के साथ चाय का आनंद लेती हुई —
कि अचानक वाहन का आना
और उस अतिथि का सपरिवार धमकना
ने अनजाने ही छेड़ दिए दिलों के तार।

अभी हम अप्रत्याशित अतिथि का
स्वागत कर ही पाते,
कि इसके पूर्व ही
उनका प्रेमभरा, अधिकारपूर्ण
निर्देश मिला —
"आप दोनों शीघ्र तैयार हो जाइए,
हम अपने जन्मस्थान महुआ चलेंगे,
आज का दिन वहीं सत्संग, सम्मान और
आराध्य के संग व्यतीत करेंगे।"
और एक अनदेखी, अनबुझी शक्ति से अभिभूत,
हम साथ हो लिए,
जिंदगी की एक नई कहानी
के अध्याय हो लिए।।
कच्ची-पक्की धूल भरी सड़क पर
फर्राटे से चलती गाड़ी,
मेरे मन में उमड़ते-घुमड़ते विचार —
शायद उस अतिथि ने
मेरी जिज्ञासा पढ़ ली:
"गाँव की माटी की गंध ने बुलाया है,
मातृभूमि की धूल सिर से लगाने आया हूँ।"
मैं चकित, विस्मित — सोचती
मेट्रोवासी का कैसा है यह संस्कार,
कैसा प्रेम, कैसी परंपरा,
कैसा ग्राम-जीवन से लगाव?
कैसा है माटी का यह कर्ज,
जिसे चुकाने व्यस्तताओं के बीच
वह शख्स आता है,
अपूर्व शांति पाता है,

सबका मन भाता है,
भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाता है।
"कुटिया" — यही तो नाम था
उस हरियाले बगीचे का,
निरव शांति,
बस पुजारी और उनका स्नेहिल परिवार,
गुरु जी का अध्ययन स्थान
और उनका शयनकक्ष।
सब वैसा ही था,
शायद जैसे गुरु जी ने छोड़ रखा था।
हवाओं में तैरता संगीत,
फिजाओं में घुलती मस्ती,
चिड़ियों की चहचहाहट,
गिलहरियों की उछल-कूद,
रंग-बिरंगे फूलों से सजी बगिया।
और उन सबके बीच
हम सब बरामदे में एकत्रित,
असीम शांति का अनुभव करते हुए —
निशब्द, आँखें बंद, नियंत्रित मन।
उस आधे घंटे ने भर दिया
आनंद का अमूल्य धन।।
भूमि पर पंक्ति में बैठकर,
प्रेम और शांति से,
पंडित परिवार द्वारा श्रद्धा से
प्रस्तुत किया गया भोजन-प्रसाद।
वाह! क्या अनुभव था —
शायद ऐसा स्वाद और आनंद
मैंने पहली बार पाया था।

अलौकिक, आध्यात्मिक अनुभव से
आनंदित और प्रह्लादित होते पाया था।
शाम को अतिथि के साथ बिताए
कुछ क्षणों ने ही
घर लौटते समय
मुझे कुछ और बना डाला था।।
वह सादगी,
वह सरलता,
जमीन से जुड़ाव,
गाँव के लिए कुछ करने की अभिलाषा,
ग्रामीणों से स्नेहपूर्वक संवाद की भाषा,
गुरु जी के 'कुटिया' के प्रति समर्पण की ललक,
'कुटिया' को एक आध्यात्मिक ज्ञान केंद्र
बनाने की सोच।
उनकी आँखों में बसे
अनगिनत सपने —
उनके आसपास भी नहीं थे
कोई अपने।
मुझे तो उनकी इस पहली मुलाक़ात
ने ही अंदर से बदल डाला।।
फिर शुरू हुआ सिलसिला —
देश और विदेश में
साथ भ्रमण और शैक्षिक कार्यों का सिलसिला।
एक-एक करके हम उनसे
सीखते चले गए।
कितने सपने संजोए थे उन्होंने —
महुआ में एक इंटर कॉलेज बनाना,
मुझे उसकी प्राचार्या बनाना,

और ग्रामीण युवक-युवतियों को
सशक्त, समृद्ध और योग्य बनाना।
रह गए वो सपने अधूरे,
चल दिए वो हम सबसे दूर —
पर जो कुछ दे गए हैं,
उसके लिए कोटिशः साधुवाद।
दिल की गहराइयों से धन्यवाद।
आप होंगे जहाँ,
खुशियाँ होंगी वहाँ।
महेंद्र सर, तुम्हें नमन…
तुम्हें नमन…
तुम्हें नमन।।

***

रिमझिम बारिश की बूँदें

मुझे अच्छा लगता है
रिमझिम बारिश की बूँदें।
दिल के अरमान लाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
प्यार का पैग़ाम लाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
खट्टी-मीठी यादें देती हैं
ये बारिश की बूँदें।
दिल को बेचैन बनाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
चाहत को भिगोती हैं
ये बारिश की बूँदें।
जिस्म को भिगाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
दिल में दर्द बढ़ाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
मन को फिसलाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
गर्जन में धड़कन बढ़ाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
बिजली भी साथ लाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
बंजर को उपजाऊ बनाती हैं
ये बारिश की बूँदें।
मुझे अच्छा लगता है
रिमझिम बारिश की बूँदें।

 अनिता कुमारी

रचनाकार परिचय

चेतन सिंह वर्मा (शिक्षक)

पिता — स्व. श्री नेमसिंह वर्मा
माता– श्रीमती दशोदिया वर्मा
जन्मतिथि – 29.08.1983
शिक्षा – बी. एस. सी.(गणित),
एम.ए.(हिन्दी, संस्कृत), बीएड
व्यवसाय — (शिक्षक)
पता – ग्राम बहेरा पोस्ट कारेसरा तहसील व जिला बेमेतरा,
छत्तीसगढ़ पिन 491335
सम्मान–शब्द शिल्पी सम्मान (वक्ता मंच रायपुर)
प्रकाशित रचनाएं – आज की बात (हृदय स्वर साझा काव्य संग्रह)
कुछ तुम कुछ हम (हृदय स्वर साझा काव्य संग्रह)
बेरंग गुलाल (मन की बातें साझा काव्य संग्रह)
बचपन के वो दिन (मन की बातें साझा काव्य संग्रह)
रूचि – गीत - कविता लेखन गायन, वादन ,मंच संचालन।

मन और मैं

कहता मन कुछ और है,
करता मैं कुछ और हूं।
मन और मैं की इस उलझन में,
पता नहीं किस ठौर हूं।
आशाओं के झूले झूले,
मन की कलियां नित-नित फूले।
नया जमाना, नए तराने,
मन की अटपट नयी उड़ानें।
पल में यहाँ और पल में वहाँ,
पता नहीं किस ठौर हूं।
कहता मन कुछ और है,
करता मैं कुछ और हूं।
देख-देखकर मैं डर जाता,
सहमा-सहमा सा रह जाता।
चाहूं कुछ तो पूछूं मन से,
किन्तु सोचकर मैं घबराता।
मन और मैं की इस अंतर में,
पता नहीं किस दौर हूं।
कहता मन कुछ और है,
करता मैं कुछ और हूं।
विचारों के विप्लव में,
पथिक पथ के पल्लव में।
क्या छोड़ूं क्या जोड़ूं जीवन,
भ्रमित भंवर के अरनव में।
मन और मैं की दुविधा में,
किसका मैं सिरमौर हूं।

कहता मन कुछ और है,
करता मैं कुछ और हूं।
'मन' की मनका कंठ लगाया,
गौरव कभी-कभी लाघव पाया।
मैं खुद को खुद में ढूंढ़ता हूं,
मन और मैं को समझ न पाया।
दोनों के इस द्वन्द्व में बोलो,
क्या मैं कोई और हूं?
कहता मन कुछ और है,
करता मैं कुछ और हूं।

***

चेतन सिंह वर्मा (शिक्षक)

ज्ञानदीप

गौरव को, गौरव का,
गौरव मिला।
शिक्षा सुमनों से सर्जित,
सौरव मिला।
यत्नों के यतन का,
यश यही यह।
अक्षर अभिनव को,
अर्जित औरव मिला।
आज ज्ञानदीप को, नया ज्ञानदीप मिला।

तर्कों के तूणीर को,
तरह-तरह तरकीब मिला।
पथ प्रशस्त परिश्रम से,
प्रज्ञा का प्रदीप मिला।
आज ज्ञानदीप को, नया ज्ञानदीप मिला।

संघर्षों के सिंधु में,
बालू तो कभी सीप मिला।
विचारों के मंथन में,
हारे तो कभी जीत मिला।
सा रे ग म सुरों को,
गीत नया संगीत मिला।
आज ज्ञानदीप को, नया ज्ञानदीप मिला।

चेतन सिंह वर्मा (शिक्षक)

कर बुलंद मन को अपना,
हौसलों का पंख मिला।
ज्ञानदीप से लक्ष्यवेध का,
नूतन मोती शंख मिला।
नम्रता और मृदुलता से,
जन-जन का प्रीत मिला।
आज ज्ञानदीप को, नया ज्ञानदीप मिला।

***

रचनाकार परिचय

हरेंद्र "हमदम" दिलदारनगरी

हरेंद्र "हमदम" दिलदारनगरी हिन्दी साहित्य की उन सजग और सृजनशील हस्तियों में से हैं, जिनके लेखन में जीवन के विविध रंग, अनुभवों की गहराई और मानवीय भावनाओं की सजीव अभिव्यक्ति मिलती है। मूलतः वाराणसी के निवासी, श्री हमदम वर्तमान में बंगलौर में रह रहे हैं तथा अपना अधिकांश समय ग्रेटर नोएडा (वेस्ट) में व्यतीत करते हैं। उनके पिता श्री कामता प्रसाद एवं माता श्रीमती बसंती देवी रहे हैं। श्री हमदम बहुआयामी शैक्षिक पृष्ठभूमि के धनी हैं। उन्होंने जंतु विज्ञान में स्नातकोत्तर (प्रथम श्रेणी) उपाधि प्राप्त की है, साथ ही एमबीए, सीएआईआईबी तथा ज्योतिष और वास्तु में डिप्लोमा भी अर्जित किया है।लगभग 39 वर्षों के सेवा काल में उन्हें भारत के सभी प्रमुख दिशाओं—उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और पूर्व (पूर्वोत्तर को छोड़कर)—में कार्य करने और वहाँ की संस्कृति, परंपरा तथा जनजीवन को जानने-समझने का अवसर मिला। इस व्यापक अनुभव ने उनके व्यक्तित्व को संवेदनशील, सजीव और समृद्ध बनाया।कविता, गीत, ग़ज़ल और अन्य विधाओं में उनका लेखन गहन अनुभूति और सहज अभिव्यक्ति से परिपूर्ण है। अध्ययन, संगीत और नये स्थलों की यात्रा उनकी रुचियों में शामिल है, जो उनके लेखन में विविधता और नवीनता का संचार करते हैं। उनकी प्रकाशित काव्य कृतियों में शामिल हैं: कलम हमने उठाई है, नहीं पीर परायी , तलाश रोशनी की, कितनी बार कहा साथी (पातियाँ प्यार की) इत्यादि।

संपर्क H. N. Srivastava , A2, Krystal Galena, Bellandur Main Road, Bellandur, Bangalore – 560103

चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं

चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं।
अभी जीवन बचा है खूब, न थकते हैं और न थमते हैं।
धीरे चलें तो क्या, मगर मन में हो उत्सव का उजास,
हर साँझ में हो स्वीकृति, और हर सुबह नई तलाश।
भूले-बिसरे पथ में भी है अनुभव का एक प्रकाश,
ना डरें धुंध से अब हम, ना सिमटें किसी पल हो हताश।
जहाँ विश्वास पनपता है, वहीं पे द्वार सभी खुलते हैं —
चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं।
शब्द जो लगते भूल गए हैं, वो भावों में फिर जागे हैं,
थकी हुई-सी देह भी अपनी स्वप्नों में होकर भागे हैं।
हँसी हमारी बाँध न पाए, कोई भी उम्र के कच्चे धागे हैं,
मौन से भी बहती है मदिर-मधुर जीवन की बहती धारे हैं।
जहाँ मन खिल उठे क्षण में, वहीं ये साँसें कलकल करते हैं —
चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं।
सीखा है जो जीवन ने, अब बाँटें वो जले अलाव,
सादा भोजन, सच्चे शब्द, और मीठे-मीठे भाव।
थोड़ी शरारत रख लें हम, थोड़ी विनोद की ठाँव,
जो मन में आए कह डालें, न ढोएँ कोई घाव।
जहाँ खुलकर बहें धड़कन, वहाँ रहते संवरते हैं —
चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं।
ना रखना है भारी रिश्तों का अब कोई बोझ या भार,
जो पास हैं वो साथ चलें, जो दूर हों — सब सादर स्वीकार।
बीत गई जो बातें हैं या रातें हैं, वो भी रखें उपहार,
छाया भी है साथी पूरक, सिर्फ़ उजाला नहीं आधार।
जहाँ हर छाया मुस्का जाए, वहीं पे जीवन चमकते हैं —
चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं।

हरेंद्र “हमदम” दिलदारनगरी

न कोई और तृष्णा हो बाकी, न कोई नाम की चाह,
जो पाया है बस वही, उसी में अब जीवन की राह।
बुढ़ापे में भी बचपन-सा मन रखे अपनी आह-उछाह,
मौन से मिल जाए सब उत्तर — न हो शब्दों की भी पनाह।
जहाँ मौन फ़िज़ा संगीत, वहाँ जीवन में महकते हैं —
चलो फिर मुस्कुरा लें हम, चलें फिर धूप में बहते हैं।
हर पल जीने के लिए है, जो भी जोश है, जीता चल,
अब इंतज़ार किसका, क्यों है? हर पल में मय पीता चल।
हर साँस है उपहार कोई, हर दिन एक तराना है,
मृत्यु भी तो जीवन जैसी — एक और ठिकाना है।
जब आना हो आ जाएगी — ये उसका अफ़साना है,
अपना काम तो जीते जाना, हर क्षण अपना ज़माना है।
जहाँ समय भी मौन हो जाए, वहीं हम भी बहते हैं —
हवा चली है जीवन की, चलो उसी में बहते हैं।

प्रश्न एक अच्छा-सा...

प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है मन में —
वक़्त बदल रहा है या इंसान बदल रहे हैं पल में?
वक़्त बदलता है — सुनते आए हैं जब से सृष्टि में आए,
कारण क्या है, कारक क्या है — विचार तो मन में आए।
प्रश्न उठाने वाले सारे, मन में उत्तर में प्रश्न ही लाए —
किसकी उँगली थामना है आगे, उत्तर वाले मन में?
प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है अब मन में।
सृष्टि में सब कुछ चलता है, फिर वक़्त की क्या गलती है?
सूरज, चंदा, तारे, सितारे, और चले अपनी प्यारी धरती है।
फ़िज़ा बदलती, मौसम सारे — और समय की अपनी हस्ती है।
कारण इनके कुछ ढूँढ़ लिए, कुछ ढूँढ़ रहे हैं क्षण में —

प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है मन में।
इंसान बदलता है समय को — ये भी पढ़ा-सुना है,
समय की धार बहा ले गई — कितने मनस्वी गुना है।
दोनों का अस्तित्व अलग है, पर साथ-साथ दुगना है,
सह-अस्तित्व है या सम-अस्तित्व — चल रहा मन में?
प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है मन में।
बदलना एक ध्रुव सत्य है — इसमें विवाद नहीं है,
फिर बदल रहे हैं इस कष्ट से — क्या विषाद कहीं है?
युग बदले हैं, सदियाँ बदली हैं — कोई अपवाद नहीं है।
जड़ता अपनी राह रोकती — हरदम प्रहार करें जड़ में?
प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है मन में।
मूरत अगर बसा रखी है मन में — सही वही है, मान लिया है मन ने,
मूरत की मिट्टी कैसी है? क्या है भरोसे की — परख लिया मन ने?
अगर भुरभुरी मिट्टी निकली — मूरत गढ़नी पड़े नई, जाना मन ने?
अपनी मिट्टी पर ही करे भरोसा — अब ठान लिया है मन ने?
प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है मन में।
प्रश्न एक नहीं — कई एक हैं, जो भीतर में गूंजें,
कभी अनसुना करते हम, और कभी देर में जूझें।
बिना सुने और बिना लड़े — उत्तर के लिए कोई ढूँढ़ें?
अपनी लड़ाई ख़ुद लड़ना है — जान लिया अब मन ने।
प्रश्न एक अच्छा-सा फिर उठ गया है मन में।
जाना है? क्या पाना है? या पाना है बस अनजाना?
साथी सच की ओर चले तो — पाना, जाना, पहचाना।
विषम डगर श्रम-रहित बने — जब मंज़िल है मन में।
जवाब प्रश्न का जम गया है — ठहर रहा है मन में।
प्रश्न को उठना है — उठ जाए, अब तैयारी है मन में।

***

रचनाकार परिचय

वंदना राणा

पता - सेट 3,टाइप 3 केंडिल लॉज ,
नियर आशिर्वाद होटल
शिमला, हिमाचल प्रदेश-171 001

ग़जल

तुम्हें खयालों में अपने बसा रखा है हमने ,
दिल में दर्द सा जैसे छुपा रखा है हमने।

बाजारे ए हुस्न समझा है लोगों ने मुहब्बत को ,
दिल की कसम इसे खुदा समझ रखा है हमने।

बहुत सहे जुल्मो सितम तेरी खातिर ए सनम .
हर गम को दिल में मगर दवा रखा है हमने।

प्यार में जान भी देते तो कोई गम ना था ,
मगर सांसों को ,तेरी सौगात समझ रखा है हमने।

वो उल्फत ही क्या जो मिट जाये मरकर ...,
जी कर इस दिल का दिया जला रखा है हमने।

तन्हाईयों में तुम्हें पाया है आसपास अपने हरबार
यादों से तेरी रूहे रोशन को जगा रखा है हमने।

***

कितने संगदिल निकले वो...

प्याज की तरह रुला कर चले गये।
जिन्दगी में जाएका बन कर आये थे
स्वाद फीका कर सारा चले गये ..।
हमने तो निभाई थीं रस्मे उल्फत सभी
ना जाने किस बात से खफा होकर चले गये।
दवा दी कोई ना ,मलहम ही दिया उस पर
जख्मों को हवा देकर चले गये ..।
सर उठाकर ना जी सकेंगे कभी. यूँ
नजरों से हमारी हमे गिराकर चले गये।
लौट कर आऊंगा मै मौसम की तरह .
सरेराह इस तरह हमे छला कर चले गये।
निभाया भी नहीं गया उनसे छुड़ाया भी नही गया
चीरफाड़ रिश्ते की कितनी बार कर चले गये।
बेवफाई का उनकी यह आलम ना पूछो
हंसते हंसते खून के आंसू रुला कर चले गये
खेल खेल कर खेल हमसे बो कर गये ऐसे ,
तारे दिन में ही दिखाकर हमको चले गये।
गैरों से हम शिकायत करते भी कैसे जब ,
अपने ही जनाजा मोहबत का उठाकर चले गये।
रस्मे उल्फत निभाते थे कभी जमाने में लोग ,
अब तो टुकड़े टुकड़े मुहब्बत के कर चले गये।

***

रचनाकार परिचय

रेनू सिंह

(राज्य पुरस्कृत अध्यापिका, उत्तर प्रदेश)

रेनू सिंह उत्तर प्रदेश के रामपुर जनपद अंतर्गत बिलासपुर ब्लॉक के मॉडल प्राथमिक विद्यालय, मुल्लाखेड़ा में प्रधानाध्यापिका पद पर कार्यरत एक समर्पित, नवाचारी और दूरदर्शी शिक्षिका हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को न केवल जनपद या राज्य स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष मान्यता प्राप्त हुई है। वे राज्य अध्यापक पुरस्कार (2018) एवं राज्य ICT अवार्ड (2021) सहित अनेक विशिष्ट सम्मानों से सम्मानित हो चुकी हैं। शिक्षा के प्रति उनकी लगन उनकी बहुआयामी शैक्षिक योग्यता से स्पष्ट झलकती है। उन्होंने बी.एस-सी., बी.एड., विशिष्ट बी.टी.सी., बी.सी.ए., एवं एडवांस डिप्लोमा इन कंप्यूटर्स जैसे कोर्सों के साथ-साथ सीटेट (CTET) और कई SWAYAM ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का भी अध्ययन कर स्वयं को निरंतर अपडेट रखा है। यह उनके सतत शिक्षण और स्व-अध्ययन के प्रति गंभीरता को दर्शाता है। रेनू सिंह के कार्यकाल में उनके विद्यालय को नई पहचान मिली। वे "मेरा विद्यालय मेरी पहचान (2021)" जैसे अभियान की प्रतिनिधि बनीं और विद्यालय को गुणवत्तापूर्ण, सृजनशील, और तकनीकी रूप से सक्षम बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके मार्गदर्शन में विद्यालय बच्चों के लिए एक आकर्षक, रचनात्मक और आधुनिक शैक्षिक वातावरण का केंद्र बन गया। उनके नवाचारी प्रयासों के लिए उन्हें भारत श्री अवार्ड (2019), नवोदय क्रांति अवार्ड (2019), मंथन – एक नूतन प्रयास (2019, 2020) तथा त्रिलोक ज्ञानोत्सव सम्मान (2022) जैसे विविध मंचों पर सराहा गया है।

मन और दिल

हमारा मन कुछ कहता,
हमारा दिल कुछ और कहता।
माने तो किसकी माने,
कुछ भी समझना मुश्किल होता।
मन कहे महफ़िल सजा लूँ,
दिल कहे तन्हाई पा लूँ।
मन कहे हँसना सीख लूँ,
दिल कहे रोना सीख लूँ।
कैसी असमंजस में पड़ी हूँ,
दिल और मन के
चक्रव्यूह में फँसी हूँ।
मन चाहे अपना बना लूँ,
दिल चाहे मन में बसा लूँ।
मन चाहे दुनिया से छिपा लूँ,
दिल चाहे मन को समझा लूँ।
कैसी अजीब विडंबना है,
दिल और मन की—
मन कुछ चाहे, दिल कुछ और चाहे।

***

नज़रें

नज़रों ने आपकी हम पर
जादू किया है कुछ ऐसा,
हम "हम" न रहे इस ज़माने में—
हुआ है असर कुछ वैसा।
छिपा है उसकी नज़रों में
कोई ऐसा राज,
हमें न थी खबर
कि राज में है हमारी याद।
कुछ तो बात है इन नज़रों में,
जो मुझे दीवाना कर गई।
कई बार बताना चाहा इस दिल ने,
बात लबों तक आकर रुक गई।
नज़रों का तीर
दिल के पार कुछ ऐसा हुआ,
दिल के एहसास को छुपा न सके,
और चाहत को अपनी दबा न सके।

***

रचनाकार परिचय

पुष्पा कुमारी

पता- house no 17 palika gram
NDMC complex sarojini nagar
New delhi - 110023

ख़्वाहिश

ख़्वाहिश है आज कि
ख़ुद से मुलाक़ात करूँ
ख़ुद को जानूँ
ख़ुद से ही बात करूँ।
अनंत काल से उलझी रही
रिश्तों के जंजाल में
कभी मिटना पड़ा
कभी सँवरना, अपनों के
ख्यालों में।
कभी जुगनू बनी और
कभी बनी चिराग।
रोशन किया महफ़िल को
कभी औरों की शान में।
ख्वाहिश है कि
बंधनों को तोड़कर
आज ख़ुद के लिए जी लूँ।
ख्वाहिश है आज कि
खुद से बात करूँ।

***

यह कैसी चली है पुरवाई

यह कैसी चली है पुरवाई,
हर इंसान बना है कसाई।

मोहल्ले के खौफ़ से
बंदूक के खौफ़ से
किसी न किसी की चीख
हर पल पड़ती है सुनाई।

यह कैसी चली है पुरवाई,
हर इंसान बना है कसाई।

फिर सुनाई दी —
अबला की चीख
गोलियों से छलनी हुआ
उसका मीत
नज़र नहीं आता उसको
अपना कोई भाई।
यह कैसी चली है पुरवाई।
हर इंसान बना है कसाई।

हर तरफ़ छाया है अंधकार
लाशों का हो रहा है व्यापार।
आज इसे कल उसे
फिर होना है विदा किसे
यह कैसी इंसान ने इंसान पर
पर है धाक जमाई।

यह कैसी चली है पुरवाई।
हर इंसान बना है कसाई।

***

पुष्पा कुमारी

रचनाकार परिचय

सतीश कुमार

खैराबाद, (कोटा, राजस्थान)
शिक्षा- B.ed, MA हिंदी साहित्य
कार्य-शिक्षण कार्य
पिता-गिरिराज प्रसाद राठौर
माता-सुगन बाई
पता- SBI बैंक के पास,ग्राम- खैराबाद,
जिला- कोटा, राजस्थान-326529

दृष्टिकोण

प्राप्ति में कुछ नहीं,
अप्राप्ति में सब कुछ है।
भावों को अभावों से
ज़रा जोड़कर तो देखो,
नित कदम चूमेंगे
आनंद सहज ही,
महज़ अपनी दृष्टि को
मोड़कर तो देखो।
ये चमक, वो दमक —
दुनिया के दुखद मोड़ हैं,
परिवार की ज़िम्मेदारी भी
ज़रा निभाकर तो देखो।
काश! मिल जातीं ख्वाहिशें,
तो पर्श से अर्श पर होते।
यह शिकायत आम तो है, मगर
फिर देख लो — जिन्हें सब प्राप्त है,
क्या सुकून फिर भी
उनके जीवन में कितना व्याप्त है?
प्राप्ति में कुछ नहीं,
अप्राप्ति में सब कुछ है।
भावों को अभावों से
ज़रा जोड़कर तो देखो।

***

हिंदी प्रेम की धुन

छोटा सा शब्द-साधक हूँ,
रोज़ शब्दों की उधेड़बुन में,
हिंदी प्रेम की अनन्य धुन में,
नित कुछ बुनबुनाकर सुनाता हूँ,
रोज़ कुछ नया गुनगुनाता हूँ।

कभी शब्दों के भाव-शिल्प में
समाज को स्वयं में ही पाता हूँ,
तो कभी उलझकर सौंदर्य-शिल्प में
ख़ुद से ख़ुद को ही सिखलाता हूँ।

छोटा सा शब्द-साधक हूँ,
रोज़ कुछ नया गुनगुनाता हूँ

***

रचनाकार परिचय

डॉ. (प्रो.) उषा कुमारी

(स्त्री रोग विशेषज्ञा)

जन्मतिथि - 21 जनवरी 1966, जन्मस्थान- मोहिउद्दीनपुर,पटना
शिक्षा-एम.बी.बी. एस., डी.जी. ओ., एम.डी.,एस.आर.एफ.
(आई. सी. एम.आर, दिल्ली)।
पदस्थापना- प्रोफेसर (जीव रसायन विभाग), भगवान महावीर आयुर्विज्ञान संस्थान, पावापुरी, नालंदा , बिहार।
व्यवसाय- चिकित्सा , शिक्षा एवं शोध कार्य, लेखन कार्य।
पिता - श्री राम पदार्थ सिंह माता- स्वर्गीया राजकुमारी देवी
पति- डॉ. दिवाली प्रसाद, नेत्र रोग विशेषज्ञ।
प्रकाशन - इंकलाब पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित काव्य संकलन पुस्तक आओ चलें अनंत की ओर भाग-1 और भाग-2 एवं शीला की कहानी उपन्यास, प्रेम - अमृत साझा काव्य पुस्तक का संपादन एवं लगभग 60 से भी अधिक साझा काव्य संग्रह पुस्तकों में इनकी कविताओं को स्थान के अतिरिक्त तिरंगा पत्रिका के साथ-साथ अन्य पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाओं को प्रकाशित किया गया है। कई साझा संकलन प्रकाशित।

मन की बात

मन की बात कह सकते नहीं,
कौन सुने मन-बात हमारी?
इधर-उधर जिस बाग में घूमी,
देखा, सुनी-सुनी थी क्यारी।
कालचक्र तो घूम रहा है,
देखो भाई! वह अपनी धुरी।
धुनी रमाते क्यों बैठे हैं
धरती पर सारे ऋषि-मुनि?
क्या दूसरों के तप-पुण्य से
कट जाएँगे बंधन सब तेरे?
क्या अब भी ढो सकेगी गंगा
पापों की गठरी सब तेरे?
मन में ठान रही अब मीरा,
नहीं बजाए झाल-करताल।
नहीं बाँधना है पग में अब
नृत्यांगना के घुँघरू व ताल।
जब तक असुरों की चलती है,
नहीं खाए राधा रानी खीर।
जब तलक कृष्ण नहीं आते,
रानी रुक्मिणी रहे अधीर।
मेरे गोपाल! तुम कब आओगे?
यशोदा माता हैं तड़प रही।
नंदन कानन वन में घूमती,
ढूँढ़ें गोपियाँ — हुईं अधीर!
मानवता के रक्षक प्रियतम,
आओ धरा पर तुम बलवीर!

मेरे मन की बात सुनो और
करो मुझको अधिक गंभीर।
सदा ही दुःख-दर्द सहने वाली
धरा जब-जब होती है अधीर।
नहीं बचे हैं कोई पाशु-मानव,
रहा नहीं कोई जीव अवशेष।
पर्यावरण से खेलो ना अब,
करो मानव धर्म को दूषित।
सद्भावना को बढ़े चलो,
नव युग-सृजन हो प्रमाणित।

***

डॉ. (प्रो.) उषा कुमारी

मन में प्रभु

मन में प्रभु के रूप —
अनुपम, अविरत, सुरभित,
करुणाकरण भूपेंद्र!
नयन हर्षित, कजरारे,
भृकुटि धनुष सम,
वृहत उन्नत भाल।

मध्यमा स्मित होठ,
हँसी खास रूप समान।
आनंदित, मनमोहिनी,
भावविभोर रहते प्रभु।
निराकार, निर्भीक और
प्रभु शिव — निरंकार!

अतुल्य भावना,
अव्यक्त वैराग्य,
सबको वैभव देने वाले —
आदित्य, योगीराज!
नीलकंठ, नील कमल,
निष्पक्ष, निहित आधार,
मृगतृष्णा से दूर,
अतीन्द्रिय, जितेन्द्र,
अनंत, अचल, अविचल।

मस्त-मस्त तुम हो —
प्रभु मस्तकलंदर!
जगतरक्षक, मुक्तिबोध!
मातृ रूप तुम्हारा,
पितृ रूप अभेद्य।
प्रभु! तुम्हारे चरणों में
सो जाऊँ — बन अबोध।

***

रचनाकार परिचय

डॉ. संजय कुमार सैनी

पिताजी का नाम – स्व0 श्री मा0 धर्मपाल सिंह सैनी
माताजी का नाम – स्व0 श्रीमती राजदुलारी सैनी
जन्मतिथि – 13-09-1971
पता - ग्राम तेलपुरा पोस्ट बिहारीगढ़ जिला हरिद्वार उत्तराखंड 247662
शैक्षिक योग्यता -एम0ए0 (रजनीति शास्त्र), बी0एड, एल0एल0बी0
लेखन – प्रकाशित कृतिया - "एक महान राष्ट्रभक्त" (स0 शहीद उधम सिंह) जीवनी काव्य कृति, "उदगार" (काव्य संग्रह ," राह-ए-अमन", "संघर्ष पथ" (फर्श से अर्श तक), हमारे प्रेरणा स्रोत (गद्य साहित्य)," पुष्पांजलि" (भजन व देशभक्ति गीत)," कवि की कल्पना" (साझा संग्रह), "क्रांति के गुमनाम योद्धा", काव्य संग्रह "सरोवर" एवं कविता के रंग शब्दों के संग,विज्ञान विजन, कविताओं का महाकुम्भ, ऐसा देश है मेरा, संगम (साझा काव्य संग्रह)
प्राप्त सम्मान/अलंकरण – शहीद उधम सिंह सम्मान 2006 शहीद उधम सिंह ट्रस्ट नई दिल्ली, विक्रमशीला हिंदी विद्या पीठ विश्वविद्यालय बिहार द्वारा हिंदी साहित्य मे सहयोग के लिए "विद्या वाचस्पति" (पी0एच0डी0) की मानद उपाधि से सम्मानित वर्ष 2022 , संगम अकादमी एवं पब्लिकेशन कोटा राजस्थान द्वारा हिंदी साहित्य के लिए संगम साहित्य सेवा सम्मान वर्ष 2023 , सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट संत कबीरनगर (उ0प्र0) द्वारा हॉनररी डॉक्टरेट अवार्ड 2025।

मन की वृत्ति

बदल रहा है पल-पल मौसम,
इसे राग कहें या अनुराग कहें?
मन की वृत्ति भी बदल रही है,
जो रंग-तरंग के साथ बहे।।

रति बनकर कभी श्वासों में
वो आहें सी भर जाती है,
मैं चाहूं या न चाहूं पर
वो प्रीति सी भर जाती है।

कभी प्रेम प्रफुल्लित होता मन,
कभी वेदना का दर्द सहे।
बदल रहा है पल-पल मौसम,
इसे राग कहें या अनुराग कहें?।।

एक प्रेम का अंकुर उपज रहा है
मन-मंदिर के कोने में,
मन के अश्रु सिंचित कर उसे
उत्सर्ग करें तरुण होने में।

ये रीत प्रीत की सदा से मन
क्यों विरह-वेदना में रहे?
बदल रहा है पल-पल मौसम,
इसे राग कहें या अनुराग कहें?।।

जाने क्यों प्रेम के सागर में
डूब रहा इस जग के संग,
नहीं जज़्बात सँभलने देते
ये प्रीत, मोह, स्नेह के रंग।

प्रेम-पाश में बंधे रहो तुम,
भले अंजानों सी राह रहे।
बदल रहा है पल-पल मौसम,
इसे राग कहें या अनुराग कहें?।।

***

ये कैसी प्रीत

ना कभी चाहा है तुम्हें
हृदय-तल की गहराई से,
ना कभी पाया है तुम्हें
बजती हुई शहनाई से।

फिर भी ये कैसी विडंबना है,
तुमसे ये कैसा अपनापन?
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?।।

काजल की लकीरें नयनों की
मुझे अपने पास बुलाती हैं,
अधरों की मुस्कान लगे ये
मुझको आवाज़ लगाती है।

प्रीत तो है अंजानी सी,
पर कहने से डरता है मन।
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?।।

प्रीत भी तुम, मनमीत तुम,
हार भी तुम और जीत भी तुम।
कुंदन-सी चमक, माथे की दमक,
नवनीत भी, संजीत भी तुम।

है प्रीति तो, पर विस्मय भी,
ना पास हैं, ना दूर हैं हम।
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?।।

जो उर में बसे, हिना-सी रचे
हर पन्ने पर अंतर्मन के,
वो प्रेम-रूप जगे, प्रीति सदा
प्रत्येक मोड़ पर जीवन के।

एक किरण खिले जब कोई मिले,
होता है दूर दिलों का तम।
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?
ये कैसी प्रीत है, प्रियतम?।।

***

रचनाकार परिचय

डॉ. नवीन जोशी

पत्नी - श्रीमती मीना जोशी
पिता- श्री हीराबल्लभ जोशी
माता- श्रीमती नन्दी देवी
पता- जोशी साहित्य सदन देघाट अल्मोड़ा उत्तराखण्ड
शिक्षा- एम ए अंग्रेजी, एम ए हिन्दी, एम ए इतिहास, पीएचडी इतिहास, बीएड और एम एस सी रसायन विज्ञान।
व्यक्तिगत परिचय- पेशे से अध्यापक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय घुग्ती केलानी स्याल्दे अल्मोड़ा उत्तराखण्ड में कार्यरत। अनेक स्वयं सेवी संस्थाओं में शिक्षा और साहित्य के लिए कार्य करते हैं। सामाजिक राजनीति मंचों से भी जुडाव है।
साहित्य परिचय -हिन्दी भाषा में तीन कविता संग्रह प्रकाशित, एक जीवनी प्रकाशित, शोध ग्रन्थ प्रकाशन हेतु प्रेस में कहानी संग्रह प्रकाशन हेतु प्रेस में, एक उपन्यास प्रकाशन हेतु प्रेस में, अनेकानेक कविता संग्रह में कविताएँ और साहित्य के अनेक पत्र- पत्रिका में कविता प्रकाशित, लेख कहानी, शोध पत्र प्रकाशित। अभी सम्पादक के रूप में हिमवंत साक्षा काव्य संग्रह पूर्ण हो कर प्रकाशित होने जा रहा है।

चिता की अग्नि

चिता की अग्नि से
सर्द मौसम में
गर्मी ले रहे श्वान को
पाप–पुण्य (भला–बुरा),
स्वच्छता–गंदगी का
कोई ख़्याल नहीं रहता।
उसे सिर्फ़,
अपने जीवन हेतु,
ठंड में काँपती हड्डियों को
सेकना था।
सत्ता के श्वान भी
सिर्फ़ और सिर्फ़
अपनी गर्मी बनाए रखने को
चिताओं की अग्नि सेक रहे हैं।
उन्हें,
पाप–पुण्य (भला–बुरा),
स्वच्छता–गंदगी का
भान होते हुए भी
गर्मी लेनी है।
कवि खोज रहा है
उन पंक्तियों को,
जिनमें
जानवर और आदमी में
अंतर किया जा सके।

मजदूर की कविता

(मजदूर दिवस पर विशेष)

फूलों पर,
हिमाल पर,
प्रियसी पर
कविता लिखने के बाद
मैंने सुनी —
घंटी!
कूकर की सीटी,
भात की उबलती थाली,
जलती रोटी की सुगंध।
फिर मैंने लिखी
अपने पर कविता —
मज़दूर पर।
मैं भी व्हाइट-कॉलर मज़दूर हूँ,
जो चल देता है
घंटी की आवाज़ पर
छोड़कर सब कुछ —
क्योंकि मज़दूर हूँ मैं…

***

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरं
शुभ्र ज्योत्स्न पुलकित यामिनीम
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् .. वन्दे मातरम् दोत्स

सप्त कोटि कन्ठ कलकल निनाद कराले

निसप्त कोटि भुजैध्रुत खरकरवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबल धारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीं मातरम् .. वन्दे मातरम् दोत्स

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारै प्रतिमा गडि मंदिरे मंदिरे .. वन्दे मातरम् दोत्स

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम् .. वन्दे मातरम् दोत्स

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम् .. वन्दे मातरम् दोत्स